विदेशी कंपनियों की जंजीरों में जकड़ा दैनिक जीवन

(स्वदेशी-विदेशी सामानों की विस्तृत सूची)

विदेशी कम्पनियों के घरेलू, खेतीबाड़ी संबंधी सामान व प्रतिबंधित दवायें और उनके देशी विकल्प

विदेशी कंपनियों की जंजीरों में जकड़ा दैनिक जीवन

(स्वदेशी–विदेशी सामानों की विस्तृत सूची)

स्वराज प्रकाशन समूह

विषय सूची

भूमिका

स्वदेशी–विदेशी सामानों की सूची आपके हाथ में है। इस सूची को 10 वर्ष पूर्व बनाया गया था लेकिन एक पेजी पर्चे के रूप में इस सूची का विकल्प आ जाने के कारण दुबारा इसको पुनर्मुद्रित नहीं कराया। लेकिन अभी कुछ साथियों ने इसको फिर से छापने की मॉग की है परन्तु जब यह सूची छपी थी तब से लेकर आज तक विदेशी कम्पनियों के कारोबार में जमीन आसमान का अंतर आ गया है। इसलिये भी इसे पुनर्मुद्रित करने की आवश्यकता महसूस हुई।

हमारी मान्यता के अनुसार इस सूची में तीन पक्ष हैं। स्वदेशी, देशी और विदेशी। इस सूची में अभी तात्कालिक रूप से विदेशी और देशी का ही जिक्र हो पाया है लेकिन स्वदेशी का न तो पूरा जिक्र हो पाया है और न ही उसका रूप निखर पाया है। लेकिन हमारा अन्तिम लक्ष्य तो वही है। इस पूरी सूची में से स्वदेशी विचार और सामान का एक अक्स उभर सके, ऐसी हमारी कोशिश है। हम उसी की कोशिश में लगे हैं और एक वृहद स्वदेशी कोश बनाने की योजना भी तैयार की है इसलिए यह सूची तब तक विकल्प के रूप में है। और इसके भी आगे सूची स्थानीय ही होगी, यह भी आन्दोलन की मान्यता है।

यह स्वदेशी–विदेशी सूची तो आन्दोलन का एक पहलू मात्र है। असल में तो आन्दोलन को वर्तमान व्यवस्थाओं के भारतीयकरण के कामों में लगाना है। लेकिन विदेशी कम्पनियों के सामानों के बहिष्कार से ही यह लड़ाई शुरू होती है और धीरे–धीरे स्वदेशीकरण की ओर बढ़ती जाती है। भारतीय प्रशासनिक, न्यायिक, स्वास्थ्य, शैक्षिक, राजैनतिक और आर्थिक की व्यवस्थाओं को भारतीय सांचे में विस्तृत जानकारी सच्चे स्वराज की रूपरेखा में दी गई है।

आजकल स्वदेशी सामानों की बिक्री करने वाले व्यावसायिक नेटवर्कों की तादात बहुत तेजी से बढ़ रही है। लोगों को लगता है कि उससे रोजगार और स्वदेशी सामान दोनों की बढ़ोत्तरी होती है लेकिन वे सब तन्त्र पूर्णतः झूठ और लालच पर आधारित हैं। आप फंसिये और दूसरों को फंसाइये के सिद्धान्त पर कार्य करते हैं। टाई और सूट पहनकर वह स्वदेशी सामान बेचते हैं। दरअसल, उनके मन और तन में कहीं से भी स्वदेशी की भावना नहीं है। वह तो स्वदेशी के लिये आन्दोलन ने जो वातावरण तैयार किया है उसका भरपूर लाभ उठाकर अपनी जेबों को गरम करना चाहते हैं। और जब हवा ठंडी होगी तो

फिर कोई दूसरा धंधा ढूंढ़ेंगे। ऐसे अवसरवादी व्यक्तियों से स्वदेशी के विचार की क्षति ही होगी। आन्दोलन के विचारों और सिद्धान्तों में यह कहीं भी दूर–दूर तक नहीं है और किसी भी प्रकार के किसी व्यावसायिक चेन से आन्दोलन का कोई रिश्ता नहीं है और हो भी नहीं सकता। आन्दोलन की मान्यता है कि जगह–जगह, मुहल्लों–मुहल्लों में जो रिटेल शाप हैं वही स्वदेशी सामानों का भी केन्द्र हो सकते हैं और उन्हें ही इसके लिये प्रोत्साहित करना है।

आज कौन सी स्वदेशी कम्पनी कब विदेशी हो जायेगी और विदेशी कब स्वदेशी हो जायेगी इसका जल्दी पता नहीं चलता। अतः पाठकों को इसके लिये खुद जागरूक रहना होगा। नये संस्करण में तो नई जानकारी आयेगी ही।

आपके पास भी अपने निकट के कुछ ऐसे स्वदेशी सामानों की जानकारी हो सकती है। जो हमारी सूची के लिए उपयोगी हों। आप वह हमें अवश्य भेजें। इस सूची को और बेहतर बनाने में आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

प्रकाशक

गुलामी नये रूप में

आज चारों तरफ घनघोर अंधेरा है। एक समाज नहीं, एक देश नहीं, समूची मानवता और समूची प्रकृति के अस्तित्व के लिये गम्भीर खतरा पैदा हो चुका है। विदेशी कम्पनियों की गिरफ्त में राष्ट्रीय अस्मिता तड़फड़ा रही है। स्वावलम्बी उत्पादकों का जहाँ जो भी समाज शेष बचा है वह भी विदेशी कम्पनियों के विनाशकारी विकास के चलते नष्ट हो रहा है। पुश्तैनी धन्धों और कुटीर उद्योगों से उजड़े लोग शहरों के चौराहों पर खड़े होकर अपना श्रम बेचने वालों की भीड़ बढ़ा रहे हैं। झोपड़–पट्टियों की तादाद बढ़ रही है और शहरों तथा महानगरों में सड़कों के फुटपाथों पर जिन्दगी जीने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यह सब पूँजीवादी ढाँचे की क्रूर अनिवार्यता है जो पूरी हो रही है।

झूठ पर टिका व्यापार

ये विदेशी कम्पनियां विकास के नाम पर आती हैं। इनके फलने–फूलने के पीछे कुछ मिथ्या धारणाएं काम करती हैं, जैसे–ये अपने साथ पूँजी लायेंगी, हमें आधुनिक तकनीक देंगी, लोगों को रोजगार के अवसर मुहैया करायेंगी, हमारा निर्यात बढ़ायेंगी। लेकिन इन्होंने किया उसका ठीक उल्टा। विकास के नाम पर सदियों से चल रहे हमारे देशी कारोबार, हुनर और हस्तशिल्प को रौंद दिया गया और उनमें लगे करोड़ों लोगों की रोजी–रोटी छीन ली गयी। पूँजी लाने का केवल दम भरा जाता है। ये निगमें कुल लागत की 95 फीसदी पूँजी राष्ट्रीय संसाधनों से उगाहती हैं, केवल 5 फीसदी अपने साथ लाती हैं। तकनीक के नाम पर पश्चिम से चलन के बाहर हो गयी तथा कूड़ेदान में फेंकने लायक तकनीक की आपूर्ति होती है। ज्यादातर विदेशी कम्पनियां ऐसे क्षेत्रों में काम करती हैं जहां आधुनिक तकनीक की जरूरत ही नहीं है। उनके सारे वायदे झूठे हुआ करते हैं। ये न तो निर्यात बढ़ाती हैं और न ही विदेशी मुद्रा का संकट दूर करती हैं। इनके कारण देश ऋण–पाश के कगार पर पहुँच गया है। विदेशी कर्ज के ब्याज को चुकाने के लिये आज कर्ज लेना पड़ता है। कर्ज देने वाली विदेशी संस्थाओं के इशारे पर सरकारों को देश की नीतियां बनानी पड़ती हैं और देशवासियों के हितों को ताक पर रख दिया जाता है। आज हमारी अर्थव्यवस्था अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था के दुमछल्ले के रूप में काम कर रही है। यह बात जनता और देश के हर प्रबुद्ध देशवासी को समझने की है।

शिकंजे में फँसी जिंदगी

विदेशी कम्पनियां हमारे जीवन में इस तरह छा चुकी हैं कि लगता है अपनी सोच तक नहीं बची। हम महसूस भी नहीं कर पाते और आँख खुलते ही उनके चंगुल में होते हैं। सबेरा हुआ और इन कम्पनियों द्वारा निर्मित ब्रश और टूथपेस्ट हमारे हाथों में आ जाता है। फिर साबुन है, क्रीम है, ब्लेड है और है तरह–तरह के सौन्दर्य प्रसाधन यानी हम अपने

शरीर की सफाई ही प्रारम्भ करते हैं इन कम्पनियों द्वारा बनाये गये सामानों से।

आज भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह इन कम्पनियों की गुलाम हो चुकी है। उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में 76 प्रतिशत बाजार इनके सामानों से भरे पड़े हैं। दवाओं के क्षेत्र में लगभग 75 प्रतिशत बाजार पर इनका कब्जा है। दवाओं के नाम पर देश के मरीजों को जहर खिला रही हैं ये कम्पनियां। प्रति वर्ष 2,000 करोड़ रुपये से अधिक का मुनाफा ये जहरीली व गैरजरूरी दवाओं को बना–बेचकर बाहर भेज रही हैं। हमारी कृषि के परम्परागत ढांचे को इन्होंने नष्ट कर दिया है। फलतः खेती बाजार की मोहताज हो गयी है। इनके द्वारा निर्मित उर्वरकों और कीटकनाशक दवाओं के जहर से समूची जमीन, आबो–हवा और मानव–स्वास्थ्य गम्भीर खतरों का सामना कर रहा है। इन विदेशी कम्पनियों की विशालकाय औद्योगिक संस्कृति, बर्बर शोषण तथा विनाशकारी नीतियों के खिलाफ पूरी दुनिया में आवाजें उठने लगी हैं लेकिन भारत सरकार आज भी पूरे जोशो–खरोश के साथ उन्हें आमन्त्रित कर रही है। इन कम्पनियों की गहरी साजिश और सरकार की ऐसी नीतियों के चलते आज देश की सम्प्रभुता संकट में पड़ गयी है।

मुक्ति का मार्ग

असली मायने में देश की एवं राजनीतिक स्वाधीनता को प्राप्त करने, सांस्कृतिक पहचान को बनाये रखने, समाज में फैली गैरबराबरी को खत्म करने तथा भूखे पेट को ईमान और सम्मान की रोटी देने के लिए आवश्यक है कि इन विदेशी कम्पनियों को देश से बाहर निकाला जाय।

अतः जरूरत है कि हम उनके द्वारा निर्मित सामानों को जानें। उनका बहिष्कार करें। उनसे असहयोग करें,स्वदेशी अपनायें ताकि हर क्षेत्र में घुसकर उन्होंने जो लूट मचा रखी है, उससे छुटकारा पाकर हम अपने मन, समाज और देश का नव निर्माण करें।

विदेशी कम्पनियों द्वारा निर्मित घरेलू सामान एवं उनके देशी विकल्प

यहाँ विदेशी कम्पनियों के उत्पादों के वे विकल्प सुझाये जा रहे हैं जो देश के सरकारी, अर्द्ध सरकारी व निजी उद्योगों में बनाये जाते हैं। सही मायने में स्वदेशी की सीमा में तो वे ही उत्पाद आते हैं जो घरेलू या लघु उद्योगों में तैयार किये गये हों। देश के विभिन्न भागों में निर्मित होने वाले ऐसे लाखों उत्पाद होंगे जो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की हमलावर विज्ञापनबाजी के कारण उपेक्षा के शिकार होंगे। ऐसे उद्योगों को पुनर्जीवित करने एवं उन्हें बढ़ावा देने के लिए जरूरी है कि विदेशी कम्पनियों के बने सामानों का पूर्ण बहिष्कार किया जाय। लेकिन इनके सामानों की पर्याप्त रूप से जानकारी न मिल पाने के कारण पुस्तिका में उनको अलग से नहीं दिया जा रहा है। कुछ ऐसे सामान जो पूर्णत: स्वदेशी की परिभाषा में आते हैं और जिन्होंने अपने कौशल से राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। लोग जिसे जानते हैं उसका नाम भी इसमें शामिल किया गया है।

वैसे तो जगह–जगह स्थानीय सामानों को प्रोत्साहित करना और उनके लिये स्थानीय बाजार मुहैया कराना, उनके नाम और क्वालिटी को स्थापित करना आन्दोलन अपना लक्ष्य मानता है। उनके संवर्धन के लिये 'स्वानंद अनुसंधान पीठम' की भी स्थापना की गई है। जिससे इन स्वदेशी उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ सके। आन्दोलन की यह योजना भी है कि इस तरह के स्वदेशी–विदेशी सामानों का एक वृहद कोश तैयार हो जिसमें सभी सामानों को शामिल किया जाय और उसका सभी भाषाओं में अनुवाद हो। इसी तरह हर इलाके की एक स्वतन्त्र सूची भी होनी चाहिये जिससे उस इलाके में बननेवाले सामानों को सूचीबद्ध करके प्रोत्साहित किया जा सके। इस योजना पर कार्य चालू है। वह स्थानीय सूची ही हमारा उद्‌देश्य है। लेकिन जब तक वह तैयार नहीं होती तब तक यह सूची उसके विकल्प के रूप में है। इसलिये इसमें वही देशी सामान ही शामिल किये गये हैं जिन्हें लोग जानते हैं।

सामान का नाम	निर्माता विदेशी कम्पनी	देशी विकल्प
	टूथपेस्ट	
कोलगेट	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	प्रॉमिस, नीम
कोलगेट जेल	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	एफरमिंट
फोरहॅन्स	ज्यौफ्री मैनर्स एण्ड कम्पनी लि.	प्रूडेन्ट, बबूल
क्लोज–अप	हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड	ग्लोब
सिबाका	हिन्दुस्तान लीवर लि.	वीको पेस्ट
ग्लीम	ज्यौफ्री मैनर्स एण्ड कम्पनी लि.	डाबर
सिगनल	हिन्दुस्तान लीवर लि.	अमर
पेप्सोडेंट	हिन्दुस्तान लीवर लि.	मिसवॉक
ऐम	हिन्दुस्तान लीवर लि.	चॉयस
एक्वाफ्रेश	स्मिथलाईम बीचम	एंकर
	टूथ पावडर	
कोलगेट	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	प्रॉमिस, योगी, गायत्री
फोरहॅन्स	ज्यौफ्री मैनर्स एण्ड कम्पनी लि.	वीको वज्रदन्ती
सिबाका	हिन्दुस्तान–सीबा गाइगी लि.	सरीन, अक्सीर, विटको, गाय छाप, बैधनाथ, चॉइस बन्दर छाप, लाल मंजन वीको वज्रदन्ती
	टूथ ब्रश	
कोलगेट	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	अजय, मोनेट,
सिबाका	हिन्दुस्तान–सीबा गाइगी. लि.	डा. स्ट्रांग, प्रॉमिस;
फोरहॅन्स	ज्यौफ्री मैनर्स एण्ड कम्पनी लि.	नीम, बबूल, पाकड
विजडम	जे.एल. मारीसन एण्ड जॉन्स लि.	आदि की दातुन व ब्रश

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का उद्देश्य हमें लूटना भर है

पोलैण्ड के मजदूर से राष्ट्रपति बने लेक वालेसा कहते हैं कि "विदेशी कम्पनियाँ अपने उत्पादों को हमारे देश में भर देना चाहती हैं। उन्होंने पोलिश क्रान्ति को भी व्यापार बनाकर बेच दिया। हम सोचते हैं कि वे हमारे विकास में मदद करेंगी लेकिन उनका उद्देश्य हमें लूटना भर है।" विदेशी कम्पनियों के सन्दर्भ में कमोबेश यही स्थिति अमरीका, अफ्रीका एवं एशिया के देशों में है। आर्थिक लूट के अलावा ये कम्पनियाँ इन देशों की राजनीति में भी हस्तक्षेप करती हैं। चिली में अलेन्दे की हत्या, भारत में बोफोर्स की घूस और शेयर घोटाला इनकी राजनीति के उदाहरण हैं।

एक्वाफ्रेश	स्मिथलाईम बीचम	दोनों का कार्य बखूबी
पेप्सोडेंट	हिन्दुस्तान लीवर लि	करती है।
जोर्डन	स्मिथलाईम बीचम	

ब्लेड

सेवन ओ क्लॉक	जिलेट यू. के लि.	टोपाज
(सुपर प्लैटीनम)		अशोक
सेवन ओ क्लॉक	जिलेट यू. के. लि.	गैलेण्ट
(स्टैनलैस)		लेजर
सेवन ओ क्लॉक	जिलेट यू.के.लि.	भारत
362 (एन)		सुपर मैक्स
बिल्मैन	विल्किंसन स्वार्ड यु.के.लि.	प्लेटीनम
बिल्टेज	बिल्किंसन स्वार्ड यु.के.लि.	सिल्वर प्रिंस
इरास्मिक	जिलेट यु.के.लि.	विद्युत

शेविंग क्रीम

ओल्ड स्पाइस	कोल फैक्स लेबोरेटरीज इ. लि.	इमामी, मैट्रो
लेदर	कोल फैक्स लेबोरेटरीज इ. लि.	अफगान, गोदरेज
पामोलिव	कोलगेट–पामोलिव इ. लि.	बी. जॉन, पार्कएवेन्यु
निविया	जे. एल. मारीसन एण्ड जॉन्स लि.	डीलक्स तथा लघु
इरास्मिक	जिलेट यू. के लिमिटेड	उद्योगों द्वारा बनई गई
मेन्थाल	कोलगेट पामोलिव (इंडिया) लि.	अनेक शेविंग क्रीम
पाण्ड्स	पाण्ड्स इण्डिया लिमिटेड	उपलब्ध है। सबसे
डेनिम	हिन्दुस्तान लीवर	अच्छा विकल्प 10
रिकार्डो	जे. के. हेलेन कार्टिस	बूँद कच्चा दूध है जिस
		के इस्तेमाल से दाढ़ी
		सबसे अच्छी बनती है।

विपणन का नया तरीका

हिन्दुस्तान लीवर और पेप्सी फूड्स यहाँ के चावल तथा मछलियों को डिब्बा बन्द करके अरबों रुपये कमा रहे हैं। ब्रुक बाण्ड कम्पनी ने डिब्बाबन्द फलों का रस, पालक पनीर और मटर पनीर बेच कर करोड़ों रुपये का व्यापार किया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ हमारे देश में इस कुसंस्कृति को फैला रही हैं कि स्वस्थ रहने के लिये विटामिन की गोली खाओ, टॉनिक पीओ और 'फलों–सब्ज़ियों का निर्यात करो'। बहुराष्ट्रीय साम्राज्यवादी व्यापार का यही चरित्र है।

आफ्टर शेव लोशन

ओल्ड स्पाइस	कोल फैक्स लेबोरेटरीज (इंडिया) लि.
पाण्ड्स	पाण्ड्स इण्डिया लिमिटेड
ओल्ड स्पाइस(कलोन)	कोल फैक्स लेबोरेटरीज (इंडिया) लि.
पाण्ड्स (कलोन)	पाण्ड्स इण्डिया लिमिटेड
ओल्ड स्पाइस (स्प्रे)	कोल फैक्स लेबोरेटरीज (इंडिया) लि.

एन्टीसेप्टिक क्रीम जैसे बोरोलीन, बोरोप्लस बोरोकैलेन्डुला आदि फिटकरी—पानी के घोल से अच्छा कोई लोशन नहीं है।

नहाने का साबुन

लक्स, सेवियोन	हिन्दुस्तान लीवर लि.
लक्स सुप्रीम	हिन्दुस्तान लीवर लि.
लक्स इन्टरनेशनल	हिन्दुस्तान लीवर लि.
रेक्सोना	हिन्दुस्तान लीवर लि.
लिरिल	हिन्दुस्तान लीवर लि.
लाइफ बॉय	हिन्दुस्तान लीवर लि.
लाइफ बॉय पर्सनल	हिन्दुस्तान लीवर लि.
ब्रीज	हिन्दुस्तान लीवर लि.
पियर्स ग्लिसरीन	हिन्दुस्तान लीवर लि.
जॉनसन (बेबी सोप)	जॉनसन एण्ड जॉनसन लि.
पाण्ड्स	पाण्ड्स इंडिया लिमिटेड
क्लियरसिल	प्रॉक्टर एण्ड गेम्बल इंडिया लि.
डेटाल	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इ. लि.
डब	हिन्दुस्तान लीवर लि.
नीको	पार्क डेविस (इंडिया) लि.
लेसाँसी	हिन्दुस्तान लीवर लि.

चन्दन, चंद्रिका, कुटीर होमाकोल, संसार गोल्डमिरूट, सनम जैस्मीन, केशनिखार सन्दल, नन्दन,नीमा, स्वास्तिक, कुमकुम निरमा बाथ, पिक्स रलक स्नेह हिमानी (ग्लिसरीन) मैसूर (सन्दल), जय, खस, रिया,रोज, नीम, कार्बोलिक(शिकाकाई) मार्गो, अफगान ब्यूटी आदिअनेक स्थानीय विकल्प भी हैं। क्वालिटी के हिसाब से खादी ग्रामोद्योग के साबुन सबसे अच्छे होते हैं।

धार्मिक आस्था का भी शोषण

गंगाजल भारतीयों के लिए पवित्र है। गंगा किनारे लगने वाले मेलों में देश के कोने—कोने से प्रतिवर्ष करोड़ों लोग आते हैं और श्रद्धापूर्वक गंगाजल घर ले जाते हैं। लेकिन अब बहुराष्ट्रीय कम्पनी "फूड स्पेशलिटीज लि." ने गंगाजल को बोतल और पॉलीथीन पैकेटों में भर कर देश में बेचना शुरू कर दिया है।

कपड़ा धोने का साबुन व पाउडर

एरियल, टाईड	प्रॉक्टर एण्ड गेम्बल इण्डिया लि.
सर्फ अल्ट्रा	हिन्दुस्तान लीवर लि.
रिन (पाउडर)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
सनलाइट (केक)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
सनलाइट(पाउडर)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
रिन (केक)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
व्हील (केक)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
व्हील (पाउडर)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
सर्फ (पाउडर)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
चेक (केक,पाउडर)	शॉ वालेस एण्ड कंपनी लि.
व्हाइट (पाउडर)	रेकिट एण्ड कोलमैन इंडिया लि.
विम (क्लीनिंग पाउडर)	हिन्दुस्तान लीवर लि.
हारपिक(टायलेट क्लीनर)	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इं. लि.
कोलिन	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इं. लि.
ब्रिक्स	हेंकल

निरमा, डाक्टर, सोप, हिपोलीन, फेना, प्लस, धारा, ससा, डेट, डॉट, सुपरफाइन, टी–सीरीज,पंजाबी, मनी, की, महक, मोर, घड़ी, नौलखा, बॉबी ,501, 555, 255 (केक) विमल, आदि। अनेक स्थानीय लघु उद्योगों द्वारा बनाये हुये साबुन तथा पाउडर बाजार में हैं। एक्सपेलर, ईगल (क्लीनिंग पाउडर) सनीफ्रेशर (टायलेट क्लीनर) आदि हैं।

कपड़ों में लगाने वाला नील

राबिन (नील)	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इं. लि.
राबिन (द्रव नील)	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इं. लि.
स्काईलार्क (निल)	सी.एम.सी.इंडिया लि.
वूलवाश	आई.सी.आई.
टीपोल	शैल (इण्डिया)

अशोक, रूबी, नीलकमल, उजाला तथा अन्य स्थानीय विकल्प, जेंटिल,रीठा टॉपशॉट, ईजी

मासूम बच्चों की जिंदगी से घिनौना खेल

विख्यात विदेशी (बहुराष्ट्रीय) दवा कम्पनी सीबा–गायगी ने यह स्वीकार किया है कि कुछ वर्ष पहले 'गैलकॉन' नामक कीटनाशक दवा की संरक्षा की जांच के लिये बिना किसी सुरक्षा सावधानी के बच्चों पर छिड़काव किया था। बाद में जांच से पता चला कि इससे बच्चों को कैंसर हो गया। कुछ साल बाद इस उत्पाद को हटा लिया गया लेकिन सरकार में घुसपैठ करके इस कीटनाशक को मिस्र में फिर से जारी कर दिया गया। इसी कम्पनी ने 1985 में जापान में जानबूझ कर झूठे दस्तावेज पेश करके 40 घातक उत्पादों की बिक्री के लिये सुरक्षा प्रमाण–पत्र हासिल कर लिया। क्या सजा मिली इसके लिये? मात्र तीन सप्ताह के लिये बिक्र पर रोक। उसके बाद यह घिनौना खेल बदस्तूर जारी है।

सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री

वेस्ले (हेयर टानिक)	पाण्ड्स इंडिया लि.	कैन्थेड्राइन
ब्रिलक्रीम (हेयर क्रीम)	बीचम ग्रुप	एक्सपेल
ओल्ड स्पाइस (हेयर क्रीम)	कोलफैक्स लैबो इंडिया लि.	स्वास्तिक, विप्रो (शैम्पू)
पाण्ड्स (शैम्पू)	पाण्ड्स इंडिया लि.	अफगान (शैम्पू)
ओल्ड स्पाईस (शैम्पू)	कोल फैक्स लैबोरेटरीज इंडिया लि.	हरबल (शैम्पू)
हेलो, लक्मे, (शैम्पू)	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	शिकाकाई, नायल
हिना (शैम्पू)	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	अफगान नैचुरल
पामोलिव (शैम्पू)	कोलगेट–पामोलिव (इंडिया) लि.	आर्निका, हेयर केयर
क्लीनिक स्पेशल	हिन्दुस्तान लीवर लि.	वेल्वेट (शैम्पू), वाटिका
क्लीनिक प्लस	हिन्दुस्तान लीवर लि.	डाबर, लवैण्डर (शैम्पू)
सनसिल्क (शैम्पू)	हिन्दुस्तान लीवर लि.	अलिकेश, मेघदूत
क्लियरसिल (शैम्पू)	प्रॉक्टर एण्ड गैम्बिल इंडिया लि.	एवं कई अन्य कुटीर
मेडिकेयर (शैम्पू)	प्रॉक्टर एण्ड गैम्बिल इंडिया लि.	उद्योगों द्वारा बनाये
ग्लीम (शैम्पू)	ज्यौफ्री मैनर्स एण्ड कम्पनी लि.	शैम्पू बाजार में है

चेहरे पर लगाने वाली क्रीम व लोशन

क्लियरसिल (क्रीम)	प्रॉक्टर एण्ड गेम्बल इंडिया लि.	वीको (क्रीम)
क्लियरसिल (क्रीम)	प्रॉक्टर एण्ड गेम्बल इंडिया लि.	इमामी (क्रीम)
पाण्ड्स, लक्मे (क्रीम)	पाण्ड्स इण्डिया लिमिटेड	फेयरग्लो, फेयरएवर
ब्यू सील (क्रीम)	पाण्ड्स लिमिटेड	इमामी (क्रीम)
ओल्ड स्पाइस (क्रीम)	कोलफैक्स लेबोरेटरीज इंडिया लि.	बोरोप्लस, बोटानिका
फेयर एण्ड लवली	हिन्दुस्तान लीवर लि.	बोरोकैलेन्डुला
निविया (क्रीम)	जे.एल. मारीसन एण्ड जॉन्स लि.	विण्टेज, अयूर
मिन (क्रीम)	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इंडिया लि.	अफगान स्नो
डेटॉल	रेकिट एण्ड कोलमैन ऑफ इंडिया लि.	हिमानी कोल्ड
ए.एफ.डी.सी.	ज्यौफ्री मैनर्स एण्ड कम्पनी लि.	अफगान कोल्ड

विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियाँ और युद्ध

खाड़ी युद्ध में तीन अमरीकी विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों–जनरल डायनामिक्स, मैकडाल डगलस और रेथियान ने पेट्रियाट (एक की कीमत लगभग 1 करोड बीस लाख रूपये) टॉमएहाक क्रूज (एक की कीमत लगभग 3 करोड़ रूपये) मिसाइलों को बेचकर अकूत मुनाफा कमाया। खाड़ी युद्ध में लगभग 3000 अरब रूपये के हथियार इस्तेमाल हुए। यह धनराशि दुनिया के सौ से अधिक देशों के ऊपर लदे विदेशी कर्ज से भी कहीं ज्यादा है।

सुप्रीम (क्रीम)	कैडबरी इण्डिया लिमिटेड	अफगान लवैण्डर
आयल एण्ड ओले	प्रॉक्टर एण्ड गेम्बल इण्डिया लि.	बोरोसिल
चार्मिस (क्रीम)	कोलगेट–पामोलिव (इण्डिया) लि.	जयश्री (क्रीम) आदि

शरीर पर लगाने वाला पावडर

नॉयसिल (पाउडर)	गलैक्सो इण्डिया लिमिटेड	बोरोप्लस (पाउडर)
लिरिल,लक्मे,डेनिम	हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड	फा
पाण्ड्स	पाण्ड्स इण्डिया लिमिटेड	बोरो कैलेण्डुला
क्यूटीकुरा	मूलर एण्ड फिलिप्स इण्डिया लि.	लवैण्डर (पाउडर)
ओल्ड स्पाइस	जॉनसन एण्ड जॉनसन लि.	मॉरिस (पाउडर)
जॉनसन (बेबी पाउडर)	जॉनसन एण्ड जॉनसन लि.	वेल्वेट (पाउडर)
शावर टू शावर	जॉनसन एण्ड जॉनसन लि.	मैसूर सन्दल

रसोईघर से सम्बन्धित सामान

टिक्का (दियासलाई)	विमको इण्डिया लिमिटेड	मोर, बतक, मुर्गा, हम,
विमको (दियासलाई)	विमको इंडिया लिमिटेड	कबीर, किसान,मकाई,
होमलाइट (दियासलाई)	विमको इण्डिया लिमिटेड	जय जवान जयहिन्द,
शिप (दियासलाई)	विमको इण्डिया लिमिटेड	शेर आदि सैकड़ों नामों
		से दियासलाई है जो
		लघु उद्योगों द्वारा बनाई
		जाती हैं।

खाद्य सामग्री

सीजन हार्वेस्ट (बासमती चावल)	पेप्सी फूड्स लि.	भारतीय किसान
इण्ड्स वैली	हिन्दुस्तान लीवर लि.	तरह–तरह के चावल
सौजन हार्वेस्ट	पेप्सी फूड्स लि.	का उत्पादन करते हैं।
(समुद्री झींगा मछली)		देहरादून की बासमती

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ और भारत का निर्यात

कहा जाता है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ निर्यात बढ़ाती हैं। आजादी से पहले भारत का विश्व निर्यात में करीब 6.2 प्रतिशत योगदान था, तब यहाँ 10–15 ही बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ थी। अब कुल विश्व निर्यात में भारत का योगदान आधे प्रतिशत से भी कम रह गया है और देश में करीब दो हजार बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ काम कर रही हैं। भारत का 66 से 70 प्रतिशत निर्यात लघु उद्योगों और हाथ के बने सामानों से होता है।

पेप्सी के साथ सरकार की शर्त थी कि जिस दिन से यह कम्पनी खाद्य सामग्री बनाएगी उसी दिन से अपने आधे उत्पाद का निर्यात करेगी। लेकिन अभी तक पेप्सी ने अपना निर्यात वायदा पूरा नहीं किया।

अन्नपूर्णा (आटा)	हिन्दुस्तान लीवर लि.	प्रसिद्ध है।
अन्नपूर्णा (नमक)	हिन्दुस्तान लीवर लि.	टाटा, अन्य स्थानीय

चटनी, मुरब्बा

मैग्गी (टमाटर चटनी)	नेस्ले इण्डिया लि.	पान, इण्डाना, प्रिया,
मैग्गी कैच अप	नेस्ले इण्डिया लि.	नैफेड एकास,
मैग्गी चिकन सूप	नेस्ले इण्डिया लि.	पिकल्स, भारत में
किसान (टमाटर चटनी)	किसान प्रॉडक्ट्स लि. (ब्रुकबाण्ड)	हज़ारों किस्म की
किसान जैली	किसान प्रॉडक्ट्स लि. (ब्रुकबाण्ड)	चटनियाँ घर घर
ब्राउन एण्ड पालसन	सी.पी.सी.इंटरनेशनल कार्पो.	में बनाती हैं।

आलू चिप्स

रफल्स	पेप्सी फूड्स लि.	चिप्स, पापड़ घर–घर
फन मंच	ज्वी फैज (स्विट्जरलैण्ड)	में बनते हैं और सार्व–
हास्टैस	पेप्सी फूड्स लि.	जनिक स्थानों पर भी
		मिलते हैं।

खाद्यतेल व देशी घी

डालडा (वनस्पति धी)	लिप्टन इंडिया लि.	अमृत, गगन, रूचि,
सोया रिफाइंड आयल	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	गोपी, धारा, अमूल्या,
सनड्राप (वनस्पति तेल)	आई.टी.सी.लि.	हनुमान, पोस्टमैन,
क्रिस्टल (वनस्पति तेल)	आई. टी.सी.लि.	नैफेड स्वीकार, रथ,
फ्लोरा (वनस्पति तेल)	लिप्टन इण्डिया लि.	पनघट, रूबी, राजा,
वाइटल (मूंगफली तेल)	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	नम्बर–1, अतुल,
वाइटल (सोयाबीन तेल)	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	शंख, सोना, सूर्या,
अनिक घी (देशी धी)	लिप्टन इण्डिया लि.	सुवर्णा, नीलगिरी,
एवरेडी घी (देशी धी)	नेस्ले इण्डिया लि.	हिमगिरि, कनौडिया,
		इन्द्रधनुष। अमूल,
		पराग, सी.डी.एफ,
		सपन इंडाना, विटा

मलेशिया के निवासियों द्वारा मित्सुबिशी का बहिष्कार

जापान की बहुराष्ट्रीय कम्पनी मित्सुबिशी चिली, बोलीविया, ब्राजील, फिलीपीन्स, कनाडा, पापुआ न्यु गुयाना और मलेशिया के घने जंगलों में अपने व्यापार के लिए दोहन कर रही है। मलेशिया के 90,000 हेक्टेयर घने जंगल प्रतिवर्ष की रफ्तार से समाप्त हो रहे हैं। आसन्न खतरे को देखते हुए वहाँ के निवासियों ने मित्सुबिशी के सामानों के बहिष्कार का आन्दोलन शुरू कर दिया है।

शिशु आहार व दूध पाउडर

मिल्क मेड (दूध पाउडर)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
नेस्प्रे (दूध पाउडर)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
फेरेक्स (दूध पाउडर)	ग्लैक्सो इण्डिया लिमिटेड
फेरेक्स (शिशु आहार)	ग्लैक्सो इण्डिया लिमिटेड
अनिक स्प्रे (दूध पावडर)	लिप्टन इण्डिया लिमिटेड
लेक्टोजन (शिशु आहार)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
एवरेडी (दूध पावडर)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
गाल्टको (दूध पावडर)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
सेरेलक (शिशु आहार)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
नेस्टम (शिशु आहार)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड
एल.पी.एफ. (शिशु आहार)	नेस्ले इण्डिया लिमिटेड

अमूल, अमूल्या, सागर, इण्डाना मिल्क केयर, सपन, अमूल स्प्रे। वैसे डिब्बा बन्द दूध का बेहतर और सुरक्षित विकल्प हमारे पास मौजूद है। शिशु के लिये माँ के दूध से अच्छा और कोई आहार नहीं हो सकता।

चाय व काफी

रेड लेबल	ब्रुकबाण्ड इण्डिया लि.
लिप्टन	लिप्टन इण्डिया लि.
टेस्टर चॉइस	नेस्ले इण्डिया लि.
टाइगर	लिप्टन इण्डिया लि.
ग्रीन लेबल	लिप्टन इण्डिया लि.
टाप	लिप्टन इण्डिया लि.
चीयर्स	लिप्टन इण्डिया लि.
डायमण्ड	ब्रुक बाण्ड इण्डिया लि.
रंगोली	गाडफे–फिलिप्स लि.
सुपर कप	गाडफे–फिलिप्स लि.
उत्सव	गाडफे–फिलिप्स लि.
सिन्थनी	गाडफे–फिलिप्स लि.

अग्नि प्रज्ञा, रेड हार्स ब्लैक हार्स, महाराजा, टाटा,जेमिनी, टाटा टी. को–ओप, राहत और ब्रम्हपुत्र की चाय तथा अन्य खुली चाय अच्छा विकल्प है। पल्लवी, गुरूकुल सोसायटी जागो डबरी

जमीन और जर्मप्लाज्म पर कब्जा

दुनिया की खेती योग्य भूमि का 80 प्रतिशत आज विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों के कब्जे में है जिसमें निर्यात करने योग्य फसलें ही उगाई जाती हैं, स्थानीय खाद्य जरूरतों के मुताबिक नहीं। दुनिया की 20 प्रतिशत कम्पनियों का खेती में इस्तेमाल होने वाले जहरीले रसायनों के व्यापार पर कब्जा है और दुनिया के 75 प्रतिशत जर्मप्लाज्म (जैव द्रव्य) पर भी इन्हीं कम्पनियों का कब्जा है। 80 के दशक में अमरीकी विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों द्वारा तीसरी दुनिया के देशों को निर्यात किये गये कीटकनाशियों में 25 प्रतिशत वे कीटनाशी थे जो अमरीका, जापान, आस्ट्रेलिया और यूरोप में पूर्णतया प्रतिबन्धित थे।

डबल डायमण्ड	ब्रुकबाण्ड इण्डिया लि.	
ब्यू डायमण्ड	ब्रुकबाण्ड इण्डिया लि.	
दिलखुश	ब्रुकबाण्ड इण्डिया लि.	
सरगम	हकन्स इण्डिया लि.	
हरा गोल्ड चाय	पेप्सी फूड्स लि.	
गुडरिक	गुडरिक ग्रुप ऑफ कम्पनी	
ताजमहल	ब्रुकबाण्ड इण्डिया लि.	
उत्तम	ब्रुकबाण्ड इण्डिया लि.	
लालकिला	लिप्टन इण्डिया लि.	
रूबी	लिप्टन इण्डिया लि.	
ताजा	लिप्टन इण्डिया लि.	
नेस्कैफे (काफी)	नेस्ले इण्डिया लि.	इण्डियन कैफे या
नेस्ले (काफी)	लिप्टन इण्डिया लि.	बाजार में खुली काफी
ब्रू (काफी)	लिप्टन इण्डिया लि.	भी मिलती है।

बिस्कूट

ब्रिटानिया	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	पारले, मेघराज,
नाइस	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	पालको, होममेड,
गुड डे	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	मेलरोज, एम्प्रो
स्नैक्स	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	रायल क्वालिटी, युम्मी
मिल्क विकीज	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	वेकमेन्स व अन्य
एम्बैसो क्रीम	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	स्थानीय स्तर पर
ग्लूकोज–डी	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	बनाये जाने वाले
बोरबोर्न	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	बिस्कुट
डिलाइट	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	टी–टाईम
सरकस	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	प्राईम–जी
मेरी	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	मिल्क मेरी
केक	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	
टाप	ब्रिटानिया कम्पनी लि.	
कैडबरी	कैडबरी कम्पनी लि.	
कूकीज	कैडबरी कम्पनी लि.	
बोर्नवीटा	कैडबरी कम्पनी लि.	
मिल्की बाइट	कैडबरी कम्पनी लि.	
लिप्टन ग्लूकोज	कैडबरी कम्पनी लि.	
हार्लिक्स पिस्ता	स्मिथलाइन बीचम कन्ज्यूमर ब्रांड्स लि.	

पिकनिक पिस्ता	कैडबरी कम्पनी लि.	

टाफी व चॉकलेट

5—स्टार (चाकलेट)	कैडबरी कम्पनी लि.	अमूल (चाकलेट),
एक्लेअर	कैडबरी कम्पनी लि.	कैमको, न्युट्रीन,पारले,
कोको चीयर	कैडबरी कम्पनी लि.	मार्टन,रस्कीज आदि।
ओल्ड जमैका	कैडबरी कम्पनी लि.	
चोको विक्स	कैडबरी कम्पनी लि.	
रोस्ट अलमांड्स	कैडबरी कम्पनी लि.	
कैडबरी जेम्स	कैडबरी कम्पनी लि.	
कैकिल	कैडबरी कम्पनी लि.	
मिल्की बार	नेस्ले इण्डिया लि.	
विक्स	प्राक्टर एण्ड गेम्बल	
पैरी	डी. आई. डी. पैरीज	
चटपट चूरनेट	प्राक्टर एण्ड गेम्बल	

लखनऊ की एक प्रयोगशाला ने पाया है कि कैडबरी, नेस्ले और अमूल की चॉकलेटों में निकिल' की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। चॉकलेटों के खाने से बच्चों में बाल सफेद होना, गुर्दे व लीवर की खराबी और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं। अमरीका के 'फूड एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन' ने भी इस बात की पुष्टि की है।

शरबत व ठण्डे पेय

लहर पेप्सी	पेप्सी फूड्स लि.	दही की लस्सी, गन्ने
लहर सेवन अप	पेप्सी फूड्स लि.	का रस,फलों का रस,
लहर मिरान्डा	पेप्सी फूड्स लि.	तरह—तरह के शरबत
लहर स्लाइस	पेप्सी फूड्स लि.	सबसे अच्छे विकल्प
किसान (ब्रुकबाण्ड)	किसान प्राडॅक्ट्स लि.	हैं।
ट्री टाप	लिप्टन इण्डिया लि.	
गोल्डन हार्वेस्ट	ब्रुक ब्राण्ड इण्डिया लि.	

आखिर क्वालिटी है क्या?

लोग अक्सर यह कहते हैं कि विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों के सामानों की क्वालिटी का कोई मुकाबला नहीं। इन्सान के हाथ का हुनर और मुंह की रोटी जो छीने और उसे निकम्मा बना दे क्या यही क्वालिटी है?

प्रकृति की अनुपम कृति नारी जो जगत—जननी है, उसे चौराहे पर नंगी—अर्धनंगी दिखाकर व्यापार की वस्तु जो बना दे क्या यही क्वालिटी है?

लाखों करोड़ों रूपए विज्ञापनों पर पानी की तरह बहा देना, लोगों के दिमाग पर कब्जा कर लेना और फिर उन्हीं से मनमानी धन लूटना, क्या यही क्वालिटी है? मां—बहनों के प्यार से, पड़ोसी की मेहनत से, गाँव—मुहल्लों के कारीगरों द्वारा बनायी गयी केवल चीज नहीं होती, उसमें प्राण होता है। जिसमें भाई के श्रम का पसीना और बहन की उंगलियों की कला हो, उससे ऊंची क्वालिटी की क्या कोई चीज हो सकती है?

सिगरेट

इण्डिया किंग	इण्डियन टोबैको कम्पनी
क्लासिक	इण्डियन टोबैको कम्पनी
गोल्ड फ्लेक	इण्डियन टोबैको कम्पनी
गोल्ड फ्लेक किंग	इण्डियन टोबैको कम्पनी
कैप्स्टन	इण्डियन टोबैको कम्पनी
कैप्स्टन किंग	इण्डियन टोबैको कम्पनी
फिल्टर	इण्डियन टोबैको कम्पनी
विल्स	इण्डियन टोबैको कम्पनी
विल्स लाइट	इण्डियन टोबैको कम्पनी
विल्स किंग	इण्डियन टोबैको कम्पनी
विल्स फिल्टर	इण्डियन टोबैको कम्पनी
विल्स फ्लेक	इण्डियन टोबैको कम्पनी
सीजर्स	इण्डियन टोबैको कम्पनी
टाइगर	इण्डियन टोबैको कम्पनी
ब्रिस्टल	इण्डियन टोबैको कम्पनी
चार्म्स फिल्टर किंग	वजीर सुल्तान टोबैको क.
चार्म्स	वजीर सुल्तान टोबैको क.
चारमीनार	वजीर सुल्तान टोबैको क.
चारमीनार स्पेशल	वजीर सुल्तान टोबैको क.
कैवेंडर्स	गाडफ्रे फिलिप्स
कैवेंडर्स फिल्टर	गाडफ्रे फिलिप्स
कैवेंडर्स लीफ	गाडफ्रे फिलिप्स
कैवेंडर्स मैग्नम	गाडफ्रे फिलिप्स
फोर स्क्वेयर लिंग	गाडफ्रे फिलिप्स
फोर स्क्वेयर फिल्टर	गाडफ्रे फिलिप्स
फोर स्क्वेयर स्पेशल फिल्टर	गाडफ्रे फिलिप्स
कैंब्रिज	गाडफ्रे फिलिप्स
चेस्टरफील्ड	गाडफ्रे फिलिप्स
रॉथमैन्स	फिलिप मॉरिस

यहाँ सिगरेट का कोई विकल्प नहीं सुझाया जा रहा है क्योंकि सिगरेट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। लेकिन गोल्डन टोबैको कम्पनी पनामा, कैप्स्टन, चांसलर बनाती है। आजादी से पहले – हिन्दुस्तान में करीब 5 हजार से ज़्यादा सिगरेट बनाने वाली कम्पनियाँ थीं, जिनको इण्डियन टोबैको कम्पनी ने निगल लिया और इसमें लगे हज़ारों लोग बेकार हो गए। डॉक्टर एवं वैज्ञानिकों का कहना है कि सिगरेट पीने से मनुष्य के गुर्दे, फेफड़े और यकृत बुरी तरह से प्रभावित होते हैं। इसके पीने से मुख्य रूप से टी. बी., कैंसर, दमा और तरह–तरह के सूत्र विकार होते हैं। यूरोप और अमरीका में कैंसर से मरने वालों की कुल संख्या में 80 फीसदी सिगरेट पीने वालों की है।

रेडीमेट कपड़े

रैंगलर जीन्स	रैंगलर कार्पोरेशन
रैंगलर शर्ट	रैंगलर कार्पोरेशन
रैंगलर टीशर्ट	रैंगलर कार्पोरेशन

रेमण्ड्स, विमल, जेसीटी फगवाडा, जे. के., भीलवाडा में ढेर सारी

नाईक टीशर्ट	नाईक कम्पनी	मिले हैं। भारत कपड़ों के
नाईक पैन्ट	नाईक कम्पनी	लिये दुनिया में मशहूर रहा
नाईक शर्ट	नाईक कम्पनी	है। कलकत्ता, कानपुर,
नाईक (ट्रैक सूट)	नाईक कम्पनी	बनारस, टांडा, सूरत,
ड्यूक पैन्ट	ड्यूक कार्पोरेशन	कांजीवरम, मैसूर, और न
ड्यूक शर्ट	ड्यूक कार्पोरेशन	जाने कितने शहर कपड़ों
ड्यूक टीशर्ट	ड्यूक कार्पोरेशन	के लिये चर्चित हैं।
एडीडास शर्ट	एडीडास कार्पोरेशन	हैण्डलूम व अन्य लघु
एडीडास पैंट	एडीडास कार्पोरेशन	उद्योगों द्वारा निर्मित सुन्दर,
एडीडास टीशर्ट	एडीडास कार्पोरेशन	अच्छे कपड़ों की तो भरमार
पावर टीशर्ट	बाटा इण्डिया लिमिटेड	है। इसके अलावा
पावर ट्राउजर्स	बाटा इण्डिया लिमिटेड	जैसे–एपेरल, विल्फो,
पावर (ट्रैक सूट)	बाटा इण्डिया लिमिटेड	डीयरली, क्लाइमेक्स
प्यूमा टीशर्ट	प्यूमा–करोना इन्टरनेशनल	आदि कंपनियां हैं।
वैन हुसैन		

जूते व पालिश

बाटा	बाटा इण्डिया लिमिटेड	लिबर्टी, लखानी, लैम्को,
पावर	बाटा इण्डिया लिमिटेड	विन्टर टाटा, एटलस,
पावर जोगर	बाटा इण्डिया लिमिटेड	डायमण्ड, रमण्ड, स्काई,
एम्बैसडर	बाटा इण्डिया लिमिटेड	विगशूज, ऑक्सफोर्ड,
क्वाडाक्वीन	बाटा इण्डिया लिमिटेड	भारत लेदर, कार्पोरेशन
नार्थ स्टार	बाटा इण्डिया लिमिटेड	महाराजा शू कम्पनी,
टीर	बाटा इण्डिया लिमिटेड	एम्बैशी शू कम्पनी आदि
हाई वाकर	बाटा इण्डिया लिमिटेड	विकल्प हैं। इसके
प्यूमा	करोना इण्टरनेशनल लि.	अलावा गाँव– शहर में
एंपायर	करोना इण्टरनेशनल लि.	मोचियों द्वारा तथा लघु
कीवी	न्यू वे केमिकल्स	व ग्रामोद्योगों द्वारा निर्मित
		असंख्य विकल्प हैं।

सिगरेट नहीं, हम जलते हैं

हमारे देश में बहुराष्ट्रीय कम्पनी आई.टी.सी. प्रतिवर्ष लगभग 1800 करोड़ रुपये का सिगरेट का कारोबार करती है। हम लोग प्रतिवर्ष 3000 करोड़ रुपये से ज़्यादा की सिगरेट पी जाते हैं। मुनाफे की दर यदि 20 प्रतिशत भी मानी जाय तो आई. टी. सी. तकरीबन 360 करोड़ रुपया प्रतिवर्ष मुनाफा कमा लेती है।

वाहनों के टायर

अपोलो	अपोलो लिमिटेड	विकान्त
फायर स्टोन	फायर स्टोन लिमिटेड	जे. के.
सीएट	सीएट इण्डिया लिमिटेड	मोदी, मोदीस्टोन
गुडईयर	गुडईयर	प्रीमियर
डनलप	डनलप कार्पोरेशन	इनचेक।

बिजली के सामान (बल्ब, पंखे आदि)

बल्ब, ट्यूब, रॉड, चोक	फिलिप्स कार्पोरेशन	बंगाल लैम्प्स, बजाज
स्टार्टर, स्विच	थामसन कार्पोरेशन	मैसूर लैम्प्स, लैम्प्स,
वॉल रिफलेक्टर लैम्प	सी. आई. ई.	हिन्दुस्तान,सीमा
हीटिंग लैम्प	सैमसंग कार्पोरेशन	लेम्प्स, सूर्या लैम्प्स,
हैलोजन लैम्प	सैन्यो कार्पोरेशन	सिन्नी, उषा, ओरियंट,
		खेतान, पोलर एन्कर
		इलेक्ट्रिकल्स प्रकाश
		लैम्प्स,एच. एम. टी. आदि।

सिलाई मशीन

सिंगर	सिंगर (इण्डिया) लि.	उषा, सहारा,
मेरिट	सिंगर (इण्डिया) लि.	रीता, अपोली

मिक्सी

सिंगर,	सिंगर (इण्डिया) लि.	सुमीत, बजाज, ज्योति
रैलिमिक्स	रैलीस (इण्डिया) लि.	त्रिवेणी, केडिया, सोम
फिलिप्स	फिलिप्स (इण्डिया) लि.	विडियोकोन, गोपी,
		महाराजा, बजाज

रेडिओ

फिलिप्स	फिलिप्स (इण्डिया) लि.	अपट्रान, नेल्को
सैन्यो	सैन्यो कार्पोरेशन	मरफी, बुश

टेलीविजन

ओनिडा		विडिओकॉन, अपट्रान,
फिलिप्स	फिलिप्स (इण्डिया) लि.	ई.सी.टीवी
अकाई		केलट्रान, कोनार्क
एल. जी.		टेक्सला, सलोरा
पानासोनिक		टी. सिरीज, आस्कर
सेमसंग		नेल्को, मेलट्रान, बुश

टार्च व बैटरी

एवरेडी (टार्च)	युनियन कार्बाइड	जीप फ्लेश लाईट के बने हुए टार्च व बैटरी जैसे–शक्ति, सुपर, सिल्वर, अनुपम, पेन्थर, उजाला, कोहिनूर, यूनीवर्सल
जीवनसाथी	युनियन कार्बाइड	
एवरेडी लाल (बैटरी)	युनियन कार्बाइड	
एवरेडी नीला (बैटरी)	युनियन कार्बाइड	
एवरेडी सफेद (बैटरी)	युनियन कार्बाइड	

खिलौने

बार्बी (खिलौने और गुड़िया)	मेटकल टायज इण्डिया लि.	त्रिमूर्ति,आनन्द, लक्ष्मी, भारत, शोभा शबनम आदि अनेक देशी कंपनियों के बने खिलौने बाजार में उपलब्ध हैं।
लियो (खिलौने)	कैम्प एण्ड कम्पनी लि.	

पेन्ट्स

ड्यूको	आई.सी.आई	पेलकोलाइट, गटटू,
ड्यूलक्स	आई.सी.आई	सेन्डटेक्स,एकोलाईट
नैरोलक	गुडलस नैरोलक पेन्ट्स लि.	स्नोसेम,सुपरलक
ब्रोलक	जैनसन एण्ड निकोलसन इण्डिया लि.	टचवुड,नट्टु केम
सुपीरियर	जैनसन एण्ड निकोलसन इण्डिया लि.	शालीमार पेन्ट्स
रैबीलक	जैनसन एण्ड निकोलसन इण्डिया लि.	गारकोट,एशियनपेन्ट्स
ब्रोलक सिल्वर	जैनसन एण्ड निकोलसन इण्डिया लि.	सुराबी,
बर्जर	बर्जर पेन्ट्स इण्डिया लि.	शक्ति
रंगोली	बर्जर पेन्ट्स इण्डिया लि.	स्पार्क
लक्सल	बर्जर पेन्ट्स इण्डिया लि.	क्वालिटी

उगता व्यापार : मरते कलाकार

कलात्मक वस्तुएं, फर्नीचर आदि बनाने के कई केन्द्र हमारे देश में मौजूद रहे हैं जो उपेक्षा के कारण दम तोड़ रहे हैं और उनमें लगे करोड़ों कारीगर बेकार हो रहे हैं। जर्मनी की कम्पनी सिसपर फर्नीचर क्षेत्र में घुस आयी है। हालैण्ड की हंटर इगलस दफ्तरों में वातानुकूलन में मददगार पर्दे बनाती है। जर्मनी की फिस्को प्लास्ट दरवाजे और खिड़कियां बनाती है। फर्श की टाइलें बनाने में नार्वे की रेबर एण्ड रोमएज जापान की ताजीमा इनकार्पोरेशन, अमरीका की आमरस्ट्रांग वर्ल्ड लि. लगी हुई हैं।

स्टेशनरी के सामान

कार्बन पेपर–टिपटाप, 503	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल, भारत
सफायर, सिल्वा बैंक	कोरस (इण्डिया) लि.	डी. पी. खोडे
प्लास्टोकार्ब, सेरीली	कोरस (इण्डिया) लि.	आदि अनेकों विकल्प
इरेजेक्स (करेक्शन फ्लूड)	कोरस (इण्डिया) लि.	एच–एन–इरेज
करेक्टिग फ्यूड (स्टेंसिल)	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल, सुपर– एक्स,
स्टेंसिल पेपर	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल डुप्लीकेटिंग
डुप्लीकेटिंग	कोरस (इण्डिया) लि.	इंक कैमल,
रबर	कोरस (इण्डिया) लि.	नटराज
गोंद	कोरस (इण्डिया) लि.	कैम,जैनसन, बेस्टिक
आलपिन (पेपर पिन)	कोरस (इण्डिया) लि.	जेब्रा, लायन, डायमंड
स्टाम्प पैड व इंक	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल, अशोक, डी.पी. सुप्रीम आदि।
पेन्सिल व शार्पनर (कटर)	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल, किशोर व स्थानीय विकल्प
ड्राइंग इंस्ट्रूमेन्ट बाक्स	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल, फ्रंटियर, लायन अन्य स्थानीय
प्लास्टिक स्केल्स	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल, ग्राफ, फ्रंटियर
काटन रिबन्स	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल व अन्य
सिल्क रिबन्स	कोरस (इण्डिया) लि.	कैमल व अन्य

पेन व बालपेन

रेनोल्ड (बालपेन)	जी.एम.पेन्स लि.	कैमल,
स्वीसर	फ्लेयर सीनेटर लि.	किंग्सन, मॉन्टेक्स
मर्सीडीज बेंज	फ्लेयर सीनेटर लि.	पीक, लिंक आदि
पारकर पेन	पारकर लि.	पेनों में हजारों
निकलसन पेन	निकलसन लि.	स्थानीय विकल्प हैं।
एड जल		

खौफनाक करतूतों के कुछ नमूने

भारत में लगभग 50 ऐसी विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियाँ काम कर रही हैं जिनका सालाना कारोबार भारत सरकार के सालाना बजट से भी ज्यादा है। उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं:– एक्सॉन, जनरल मोटर्स, ब्रिटिश पेट्रोलियम, यूनीनीवर (हिन्दुस्तान लीवर), आई. बी. एम, गल्फ आयल, आई. टी. टी., फिलिप्स, हेक्स्ट, ई. एन. आई, बेन्ज, वी. ए. एस. एफ., बेयर, नेस्ले, आई. सी. आई., ब्रिटिश अमरीकन टोबैको (इण्डियन टोबैको कम्पनी), हिताची, गुडईयर टायर, जी. ई. सी. सीमेन्स, बेस्टिग हाऊस, मित्सुबिशी।

कम्पूटर व उसके सामान

एच. पी.	हेलवेट पेकॉर्ड	एच.सी.एल., विप्रो
कॉम्पेक		डार्ट, आई टी वर्ल्ड
आई बी एम	आई बी एम	जेनिथ, पीसीएम,

प्रिंटर कर्टेज

एप्सान	सीको एप्सान कार्पोरेशन	एक्सल
एच. पी.	एच. पी.	ए: वी.
कैनन		पाईका, फिनेकल

फ्लोपी

फिलिप्स	फिलिप्स इडिया लि.	एम केट
सोनी	सोनी कार्पोरेशन	ए. वी.
मेक्सल	हिताची मेक्सल लि.	बिना नाम की ढेरों
वरवाटिम	वरवाटिम कार्पोरेशन	फ्लॉपी मिलती हैं।

विदेश से आयी टेक्नोलॉजी (?)

विज्ञापन का काला जाल

1966 में इंग्लैंड के मोनोपोलो कमीशन ने यूनीलीवर (भारत में हिन्दुस्तान लीवर) की जांच करते हुए पाया कि यह कम्पनी अपने विज्ञापन और प्रचार पर अपने बजट का 30 प्रतिशत से ज़्यादा खर्च करती है। पेय पदार्थ बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कम्पनी कोकाकोला के अधिकतम कर्मचारी इस बात पर शोध करते हैं कि विश्व भर में लोगों में शीतल पेय के लिए चाहत कैसे पैदा की जाय? प्रसिद्ध अमरीकी लेखक बॉबहिल ने कोकाकोला के विस्तृत अन्वेषण कार्यक्रम की जाँच करने के बाद टिप्पणी की थी कि मानवता के इतिहास में मिस्त्र के पिरामिडों के निर्माण के बाद यह सबसे बड़ा प्रायोजित कार्यक्रम है जिसमें अविश्वसनीय रूप से विशाल मानव ऊर्जा का प्रयोग अपने उत्पाद को बेचने मात्र के लिये हो रहा है। कुछ कम्पनियों ने अकेले वर्ष 1990 में विज्ञापन पर कितना खर्च किया इसकी एक बानगी देखें। जनरल मोटर्स कार्पोरेशन 16000 करोड़ रुपये, प्रॉक्टर एण्ड गेंम्बल 14400 करोड़ रुपये फिलिप मोरिस कम्पनी 13800 करोड़ रुपये , जॉन्सन एण्ड जॉन्सन 4200 करोड़ रुपये ।

दुनिया के विकसित–अमीर देशों के द्वारा दी गयी टेक्नोलाजी के बदले प्रतिवर्ष 400 करोड़ रुपया रायल्टी के रूप में हमारे देश से बाहर जा रहा है। लेकिन देखने की बात यह है कि इन विकसित देशों द्वारा क्या टेक्नोलाजी हमारे देश लो दी गयी है? किस देश ने किस प्रकार की टेक्नोलाजी दी है इसके कुछ उदाहरण:

टेक्नोलॉजी	कहाँ से आयी
1. नमक	स्विट्जरलैण्ड
2. बच्चों के कपड़े	नीदरलैण्ड
3. केले की चटनी	डेनमार्क
4. चाकलेट–टाफी	ब्रिटेन
5. साफ्ट ड्रिंक	अमरीका
6. चीनी–मिट्टी के बर्तन	जापान, इटली, स्वीडन
7. कांच का सामान	अमरीका, बेल्जियम
8. बाल प्वाइंटपेन	स्विट्जरलैण्ड, जर्मनी
9. छाता	जापान, ताईवान
10. प्लास्टिक के बर्तन	ब्रिटेन
11. स्कूली बैग	ब्रिटेन
12. मोटरकार की सीट	जापान
13. गहने–जेवरात	कनाडा
14. सुई	स्विट्जरलैण्ड
15. प्लास्टिक की बोतलें,	ब्रिटेन, अमरीका
16. खिलौने बनाने के लिए	अमरीका, जापान इटली,
17.स्पोर्टस कैप	कनाडा
18. च्यूइंगम और बबलगम	दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन
19. आलू–चिप्स	अमरीका
20. टमाटर की चटनी	बुल्गारिया, अमरीका
21. घरेलू चाकू	नीदरलैण्ड
22.प्लास्टिक के फूल	अमरीका
23. सौन्दर्य प्रसाधन	अमरीका, फ्रांस
24. गैस लाईटर	स्पेन
25. फास्ट–फूड	नीदरलैण्ड, अमरीला,
26. तकिया	फ्रांस
27. हैण्ड बैग	अमरीका
28.लिपिस्टिक	अमरीका

माल देशी, मुहर विदेशी

यह आम धारणा है कि विदेशी कम्पनियाँ अपने साथ पूंजी लाती हैं, उच्च उत्पादन तकनीक लाती हैं और देश की तरक्की में सहायक होती हैं। इस धारणा की वजह से ही आज हमारी अर्थव्यवस्था इन विदेशी कम्पनियों का दुमछल्ला हो गयी है। खुद विदेशी कम्पनियों की कारगुजारियों ने ही इस भ्रम के चिथड़े उड़ा दिये हैं। नीचे ऐसी कम्पनियों की सूची दी जा रही है जिन्होंने न तो पूँजी लगाई न कोई टेक्नोलॉजी लाई है और न ही कोई फैक्टरी लगाई है लेकिन माल उनके नाम से बिक रहा है और करोड़ों रुपया देश से बाहर जा रहा है।

सामान का नाम	भारतीय उत्पादक	बेचने वाली विदेशी कम्पनी
जूते	आगरा, कानपुर, कलकत्ता स्थानों के मोचियों द्वारा ठेके पर	बाटा (इण्डिया) लि.
कोलगेट टूथ पावडर	क्रिस्टल कॉस्मेटिक्स, हैदराबाद	कोलगेट–पामोलिव इण्डिया लि.
चार्मिस लोशन	एम.जी. साहनी एण्ड कम्पनी, दिल्ली	कोलगेट पामो. इ.लि.
हेलो शैम्पू	एम.जी.साहनी एण्ड कम्पनी, दिल्ली	कोलगेट पामो. इ.लि.
पामोलिव शैम्पू	एम.जी. साहनी एण्ड कम्पनी, दिल्ली	कोलगेट पामो. इ.लि.
कोलगेट टूथपेस्ट	सन शाइन कॉस्मेटिक्स	कोलगेट पामो. इ.लि.
कोलगेट ब्रश	अडवानी इण्डस्ट्रीज, महाराष्ट्र	कोलगेट पामो. इ.लि.
आयोडेक्स (बर्न स्प्रे)	अका पैक इंडिया	एस्केफ इण्डिया लि.
सिबाका टूथ पाउडर	कैन्ट लैब्स, बम्बई	हिन्दुस्तान सीबा–गाइगी लि.
सिग्नल टूथ पेस्ट	इण्टरनेशनल हेल्थ केयर प्रॉडक्ट्स	हिन्दुस्तान लीवर लि.
लिरिल फेशनेश टेल्कम	इण्टरनेशनल हेल्थ केयर प्रॉडक्ट्स	हिन्दुस्तान लीवर लि.
क्लीनिक शैम्पू	इण्टरनेशनल हेल्थ केयर प्रॉडक्ट्स	हिन्दुस्तान लीवर लि.
सनसिल्क शैम्पू	इण्टरनेशनल हेल्थ केयर प्रॉडक्ट्स	हिन्दुस्तान लीवर लि.
फेयर एण्ड लवली क्रीम	इण्टरनेशनल हेल्थ केयर प्रॉडक्ट्स	हिन्दुस्तान लीवर लि.
टियारा शैम्पू	फियोरा कॉस्मेटिक्स	जे.के.हेलन करटिस
निविया आफ्टर शेवलोशन	कास्मोपैक, सिल्वासा	जे.एल.मॉरीसन एण्ड जॉन्स लि.
निविया टेल्कम	केवन कॉस्मेटिक्स	जे.एल.मॉरीसन एण्ड जॉन्स लि.
निविया क्रीम	केवन कॉस्मेटिक्स	जे.एल.मॉरीसन एण्ड जॉन्स लि.
क्यूटीकूश टेल्कम	नीनन प्रॉडक्ट्स	म्यूलर एण्ड फिलिप्स
पामेड वैसलीन	जे.बी. आडवानी एण्ड कं.	पाण्ड्स इण्डिया लि.
पाण्ड्स सन्डल टेल्कम	इण्टरनेशनल हेल्थ केयर प्रॉडक्ट	पाण्ड्स इण्डिया लि.

गुलाम होती जा रही है खेती बाड़ी

गुलामी को स्थायी आधार देने के लिए विदेशी कम्पनियों ने देश की खेती–बाड़ी पर कब्ज़ा करने का कुचक्र रचा है। काफी हद तक ये कम्पनियाँ अपने इरादे में सफल रही हैं। बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाओं, ट्रैक्टर व अन्य औजारों एवं सिचाई के अकूत साधनों पर टिकी आधुनिक खेती पूरी तरह से विदेशी कम्पनियों के कब्ज़े में होती जा रही है। हज़ारों साल से चली आ रही हमारी पुश्तैनी खेती की कब्र खुद रही है और विकसित खेती के नये तरीके के नुकसान सामने आने लगे हैं, मसलन खाद्य प्रदूषण, पर्यावरण और जमीनों का बंजर होना।

कृषि वैज्ञानिकों की एक बड़ी तादाद अब इस बात को स्वीकारने ही नहीं बल्कि जोरदार ढंग से कहने भी लगी है कि हरित क्रांति से उपजे खेती के नये तौर–तरीकों ने काफी दूरगामी कुप्रभाव छोड़ा है। संकर बीजों के चलन ने कई समस्याओं को जन्म दिया है, मसलन खेती मँहगी हो गयी है क्योंकि इसके लिये रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं एवं अधिक सिंचाई का होना जरूरी है। दूसरे इसने पर्यावरण में असंतुलन को जन्म दिया है। बड़े बाँध बनाकर नहरों के द्वारा पानी पहुँचाने की प्रक्रिया में बाग–बगीचों एव फलदार वृक्षों का लगभग सफाया हो गया है, बाँधों ने लाखों एकड़ जमीन को लील लिया है, लोगों को बेघर कर दिया है और देश पर अरबों रुपये का कर्ज लदा ऊपर से । तीसरे खेती के इस तरीके ने हज़ारों साल से चले आ रहे बीजों की लाखों देशी किस्मों को खत्म कर दिया।

विदेशी कम्पनियों की गुलामी से मुक्ति के लिए जरूरी है कि हम उनके द्वारा आरोपित कृषि प्रणाली को बदलें, उनके सामानों का इस्तेमाल बन्द करें और अपनी जरूरतों, जलवायु और पर्यावरण के मुताबिक कृषि प्रणाली विकसित करें। यहाँ विदेशी कम्पनियों द्वारा निर्मित खेती में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशक एवं खर–पतवारनाशक दवाइयों के कुछ प्रचलित रासायनिक नाम दिये जा रहे हैं। इन्हें कई विदेशी एवं देशी कम्पनियाँ अलग–अलग व्यापारिक नामों से बनाती हैं। यहाँ इन दवाइयों के नाम एवं इनकी निर्माता विदेशी कम्पनियों तथा देशी कम्पनियों के नाम दिये जा रहे हैं ताकि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कीटमारकों के बहिष्कार में मदद मिल सके। यद्यपि इस किताब में रासायनिक दवाइयाँ बनाने वाली कुछ देशी कम्पनियों के नाम दिये जा रहे हैं फिर भी आन्दोलन की मान्यता है कि कोई भी रासायनिक दवाई (चाहे वह देशी कम्पनी की हो या विदेशी कम्पनी की) मिट्टी के लिये हानिकारक होती है। इसलिये भारत में पारम्परिक ढंग से खाद और दवाई बनाने की जो तकनीक रही है वही कारगर है और उसे ही आगे बढ़ाना है। इसलिये यहाँ (पेज 15 पर) पारम्परिक पद्धति से कीटनाशक बनाने के कुछ नुस्खे भी दिये जा रहे हैं लेकिन विस्तृत जानकारी के लिये पाठक आन्दोलन की पुस्तक 'स्वावलंबी खेती कैसे कर?' अवश्य पढ़ें।

कीटनाशक दवाएँ

दवा का नाम	निर्माता बहुराष्ट्रीय कम्पनी	निर्माता देशी कम्पनी
हैप्टाक्लोर	रैलीस (इण्डिया) लि.	गुजरात एग्रोकेम--
मिथाइल पैराथियान	बायर (इण्डिया)	इण्डस्ट्रीज
	सैण्डोज (इण्डिया) लि.	पेस्टीसाइड्स इंडिया
ओरगेनोमरक्यूल डस्ट	बायर (इण्डिया) लि.	भारत पल्वराइजिंग
कापर फंजीसाइड	रैलीस (इण्डिया) लि.	मिल्स, सेण्ट्रल
	बूट्स कम्पनी	इन्सेक्टीसाइड्स एण्ड
		फर्टीलाइजर्स,
		गुजरात एग्रोकेम
		इण्डस्ट्रीज
		पेस्टीसाइड्स इण्डिया
		मैसूर इन्सेक्टीसाइड्स
जिंक कार्बोनेट	इण्डोफिल केमिकल लि.	भारत पल्वराइजिंग
		मिल्स,इण्डस्ट्रियल
		मिनरल्स एण्ड
		केमिकल्स कम्पनी
कैप्टान	रैलीस (इण्डिया) लि.	भारत पल्वराइजिंग
		मिल्स
इथाइल पैराथियान	सैण्डोज (इण्डिया) लि.	भारत पल्व. मिल्स
	बायर (इण्डिया) लि.	
डायोमिथोएट	सैण्डोज (इण्डिया) लि.	भारत पल्व. मिल्स
थायोमिटान	सैण्डोज (इण्डिया) लि.	भारत पल्व. मिल्स
		सेण्ट्रल इन्सेक्टीसाइड्स
		एण्ड फर्टीलाइजर्स
इण्डोसलफान	हेक्स्ट फार्मास्यूटिकल्स	सेण्ट्रल इन्से. एण्ड
		फर्टीलाइजर्स
		भारत पल्व. मिल्स
एम. सी. पी. ए.	रैलीस (इण्डिया) लि.	भारत पल्व. मिल्स
		सेण्ट्रल इन्से. एण्ड
		फर्टीलाइजर्स

ट्रैक्टर

मैसीफर्ग्यूसन	मैसीफर्ग्यूसन (इण्डिया)	महेन्द्रा, स्वराज, वीर
आयशर		प्रताप

इण्टरनेशनल (आई.एच.)	इण्टरनेशनल हार्वेस्टर	एच. एम. टी. जीटर

पम्पिंगसेट (विद्युत)

जी.ई.सी. (इलेक्ट्रिक मोटर)	जी.ई.सी. (इण्डिया) लि.	टैक्स्मो, किर्लोस्कर,
सीमेंस	सीमेंस (इण्डिया) लि.	ज्योति, कलसी
ब्राऊन ब्रॉवरी	एशिया ब्राऊन ब्रावरी	क्राम्पटन, मास्टर, एन. जी. एफ. आदि अनेकों

फुटकर सामान (इंजनों में प्रयोग होने वाले)

नाजल होल्डर	मोटर इण्डस्ट्रीज कम्पनी	भारत की ऊषा कम्पनी
नाजल	मोटर इण्डस्ट्रीज कम्पनी	इन सभी समानों का
डीजल फिल्टर	मोटर इण्डस्ट्रीज कम्पनी	निर्माण करती है जो
सिंगल सिलिंडर पम्प	मोटर इण्डस्ट्रीज कम्पनी	बाजार में सरलता से उपलब्ध हैं।

पम्पिंगसेट (डीजल) : सभी डीजल पम्पिंगसेट (टैक्सवेल, विधाता, किर्लोस्कर, कार्नेल, फील्ड मार्शल, विश्वजीत आदि) भारतीय कम्पनियों द्वारा बनाये जाते हैं। इस क्षेत्र में विदेशी कम्पनियाँ नहीं टिक पायीं। भारत निर्मित डीजल इंजनों का बाजार दुनिया के कई अन्य देशों यहाँ तक कि विकसित देशों में भी है। इस बात से यह जाहिर होता है कि यदि सुविधा मुहैया कराई जाय तो भारतीय वैज्ञानिक, इंजिनियर एवं तकनीशियन किसी भी प्रौद्योगिकी के लिए भारत को विकसित देशों का मोहताज नहीं होने देंगे।

जहाँ बच्चों को दूध की बूँद न मिल

वहाँ विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों को चॉकलेट बनाने की खुली छूट देना कहाँ तक उचित है?

"हालैंड, डेनमार्क, स्वीडन ओर न्यूजीलैंड में दूध का व्यापार 100 प्रतिशत सहकारिता आधारित है। इंग्लैंड में केवल मान्यता प्राप्त सहकारी संस्था से ही दूध खरीदा जा सकता है। अमरीका और कनाडा में भी निजी कम्पनियों को दूध के बाजार पर केवल 3 प्रतिशत की अनुमति मिली है और वह भी किसी सहकारिता संगठन की शर्तों पर। भारत को क्या जरूरत पड़ गई कि वह विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों के स्वागत में लाल कालीन बिछाए जबकि मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों ने भी उन्हें अनुमति नहीं दी है?

हमने (अपना दुग्ध सहकारिता आन्दोलन) उस समय शुरू किया जब कोई खतरा लेने को तैयार नहीं था और जब हम एक सपना साकार करने में कामयाब हुए हैं तब विदेशी (बहुराष्ट्रीय) कम्पनियों को अधिग्रहण के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। दूध एक अनिवार्य पदार्थ है जबकि चीज, चाकलेट विलासिता है। नेस्ले, ग्लैक्सो आदि कम्पनियों पर दूध की माँग पूरी करने की बाध्यता नहीं है। बच्चों को दूध उपलब्ध कराने के बजाय डेयरी पदार्थों को बनाने के लिए इकट्ठा किया जा रहा है।

डॉ. वर्गीस कुरियन, अध्यक्ष, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड

कीटनाशक बनाने की कुछ अन्य देशी विधियाँ

कपास की खेती के लिये

1) कपास की खेती में लगने वाले कीड़ों के लिये एक किलोग्राम नीम की निम्बोली, सौ ग्राम सोडा (कपड़ा धोनेवाला) और 50 ग्राम लहसुन का रस—तीनों को आपस में मिलाकर 15 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

2) कपास की खेती के लिये 150 किलोग्राम निम्बोली की खली (निम्बोली में से तेल निकालने के बाद बचा हुआ चूरा) प्रति एक हेक्टेयर खेत में दस—पन्द्रह दिन के अन्तर पर छिड़कने से किसी भी तरह का कीड़ा फसल पर नहीं लगता।

3) मूँगफली की खेती में कीटनाशक के रूप में प्रयोग के लिए 1.5 किलोग्राम सीताफल के पत्तों की चटनी बनाकर एक लीटर पानी में डालकर एक रात तक रख देना चाहिए। इसके ही साथ 500 ग्राम सूखी (लाल) मिर्च पानी में रात भर के लिए रखकर तथा 2 लीटर पानी में 1 किलोग्राम निम्बोली को पीसकर ऊपर से दो किलोग्राम पानी मिलाकर एक रात रखकर, तीनों द्रवों को 10 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़कना चाहिए। इससे सभी हानिकारक कीट समाप्त हो जाते हैं। यह दवाई बैगन की फसल के ऊपर भी डाली जा सकती है।

4) नफतिया के 500 ग्राम पत्ते 2.5 लीटर पानी में डालकर इतना गरम करें कि पानी आधा रह जाय फिर इस दवाई को 25 लीटर पानी में मिलाकर कपास पर छिड़कें।

5) केतकी के पेड़ के 500 ग्राम पत्ते दो लीटर पानी में इतना गरम करें कि पानी आधा रह जाय फिर इसे 50 लीटर पानी में मिलाकर कपास की फसल पर छिड़कें।

जवार की फसल के लिये

6) तीन किलोग्राम नीम के पत्ते को पीसकर उसमें 300 ग्राम हल्दी मिलायें। फिर उसमें 5 लीटर गोमूत्र और 5 किलोग्राम गाय गोबर को 20 लीटर पानी में डालकर दो दिन तक रखने के बाद उसे खूब मिलायें और दो सौ लीटर पानी में घोलकर खेती पर छिड़कें, सभी तरह के हानिकारक कीट मर जायेंगे।

7) किसी भी प्रकार की सब्जी के लिये 1 किलोग्राम तम्बाकू को दो लीटर खट्टी छाँछ में मिलायें। फिर इस मिश्रण को 15 लीटर पानी में मिला कर और हर 10 दिन के अन्तर पर सब्जियों पर छिड़कें। इससे कीट नहीं लगेंगे।

8) 10 किलोग्राम सूखी निम्बोली को पीसकर पावडर बनायें फिर उसे एक कपड़े में भरकर पोटली बनाकर 500 लीटर पानी में इस पोटली को हाथ से मसलकर रस निकालें। यह किसी भी तरह की फसल के लिये उपयोगी है।

9) एक बरतन में 3 लीटर गोमूत्र, 3 किलो गोबर और 3 लीटर पानी मिलाकर

इसमें 250 ग्राम पुराना गुड़ मिलायें। इस बरतन को इस तरह बन्द करें कि उसमें हवा न जाय। 8 दिन बाद इस दवा को 200 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़कें। पूरी फसल के दौरान 3—4 बार छिड़क सकते हैं।

10) 100 लीटर गोमूत्र में 7 किलो नीम के पत्ते, 7 किलो आकड़ा के पत्ते और 7 किलो सीताफल के पत्ते मिलाकर 15 दिन तक रखें। फिर 15 दिन बाद इसमें 100 ग्राम लहसुन का अर्क मिलाकर गर्म करें। अब इसमें से आधा लीटर दवा 100 लीटर पानी के अनुपात में मिलाकर फसल पर छिड़कें। यह सभी फसलों पर काम आती है।

11) 3 किलो ग्राम गन्धाती के पत्ते 20 लीटर पानी में डालकर गरम करें। इतना गरम करें कि पानी 5 लीटर रह जाय। फिर इसमें से 100 ग्राम दवा लेकर 15 लीटर पानी में मिलायें और फसल पर छिड़कें। यह दवा भी सभी फसलों के लिए उपयोगी है।

12) 3 किलोग्राम रतनजोत के पत्ते 20 लीटर पानी में तब तक उबालें जब तक पानी एक—चौथाई न रह जाय। फिर इसमें 100 मिलीलीटर दवा 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। यह दवा सभी फसलों पर उपयोगी है, लेकिन आम की फसल पर अत्यन्त उपयोगी है।

13) 3 किलोग्राम तम्बाकू पावडर, 250 ग्राम वावडिंग का पावडर, 5 लीटर गोमूत्र, 5 किलोग्राम गोबर को आपस में मिलायें। और 20 लीटर पानी में दो दिन तक रखें। उसके बाद उसे 200 लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिड़कें। यह फलों की खेती पर विशेष असरकारक है।

धान की खेती के लिये

14) 1 किलोग्राम रामी के पत्तों का रस निकालकर 10 लीटर पानी में डालें और गरम करें। फिर इस दवा को 100 लीटर पानी में मिलाकर धान की फसल पर छिड़कें।

नोटः यहाँ पर दवाई बनाने के कुछ ही तरीके दिये गये हैं। खेती से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिये कृपया स्वावलंबी खेती कैसे करें किताब देखें।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और बेरोजगारी

सभी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हमारे देश में घुसते समय रोजगार बढ़ाने का कोरा सपना दिखाती हैं। आँकड़े गवाह हैं कि इन कंपनियों के आने पर बड़ी संख्या में लोग बोरोजगार हुए हैं। हाल में (1989 से पहले) अमरीका की बहुराष्ट्रीय कंपनी जनरल मोटर्स भारत में आई है। आने से पहले इसने अमरीका में अपनी 29 उत्पादन इकाइयाँ बन्द की और 74 हज़ार कारीगरों की छँटनी की।

जनरल मोटर्स, कोकाकोला, आई. बी. एम. फोर्ड जैसी विशालकाय बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के लिए अपनाई गई खुले दरवाजे की आर्थिक नीति के कारण अगले दो वर्षों में हमारे देश में 1 करोड़ 50 लाख मजदूर बेरोजगार हो जाएंगे (अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार)। नेशलन काउन्सिल ऑफ एप्लाईड इकोनोमिक रिसर्च (नई दिल्ली) की रिपोर्ट के अनुसार नई बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आने एवं निजीकरण की नीति के कारण प्रतिवर्ष 40 से 50 लाख लोग बेरोजगार होंगे।

कुछ प्रमुख प्रतिबंधित दवाओं की सूची जो भारत में खुलेआम बिकती है

हमारे देश में इस समय लगभग 515 दवाएँ हैं जो बाजार में 3,000 विभिन्न नामों से बिक रही हैं। इन दवाओं पर दुनिया के तमाम देशों में पाबंदी लगायी जा चुकी है तथा इनके निर्माण और बिक्री को घातक अपराध घोषित किया जा चुका है। डाक्टरों और वैज्ञानिकों का कहना है कि ये दवाएँ प्राणघातक हैं और आदमी के रक्त को प्रदूषित कर कैंसर, लकवा, अंधापन, विकलांगता जैसी भयंकर बीमारियों को जन्म देती हैं तथा शरीर की रोग से लड़ने की ताकत खत्म कर देती हैं। यह गम्भीर चिन्ता का विषय है कि दुनिया के अन्य तमाम देशों में जहर घोषित की जाने वाली कुछ दवाएँ हिन्दुस्तान में खुली बिक्री की इजाजत पा चुकी हैं। यहाँ कुछ ऐसी दवाओं के नाम दिये जा रहे हैं जिनको मुख्यरूप से सीबा—गायगी, ग्लैक्सो, सैण्डोज, मे एण्ड बेकर बरोवेलम, पार्क डेविस, ज्योफ्रीमैनर्स, फाईजर, हेक्स्ट, रोस, स्केक, एस. जी. फार्मास्यूटिकल्स, बूट्स कम्पनी तथा इंफार इण्डिया जैसी विदेशी कम्पनियाँ बनाती हैं। इन दवाओं को बेचकर ये कम्पनियाँ देश का अरबों रूपया प्रतिवर्ष बाहर भेज रही हैं।

दवाओं का नाम	देश जहाँ प्रतिबन्धित हैं	कुप्रभाव
1. ऑक्सीफिन बूटाजोन	ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी,	इन दवाओं की केवल
2. फिनाइल बूटाजोन	जापान, इटली, स्वीडन,	कुछ खुराक लेने पर ही
3. एक्टीमाल	फिनलैण्ड, अमरीका	अंतड़ियों में घाव हो
4. एल्जीरिल	बांग्लादेश, आस्ट्रेलिया	जाता है। इससे रक्त
5. अरीस्टोपाइरीन	न्यूजीलैण्ड, मलेशिया	कैंसर होने का खतरा
6. बूटाकार्टिडान	इजराइल, जार्डन आदि।	रहता है। इन दवाओं
7. बूटाप्राक्सिवान		से अब तक 15,000

1988 में प्रतिबन्धित दवायें

भारत सरकार द्वारा 15 जून 1988 को विशेष गजट नोटीफिकेशन एक्स 11018/1/88 डी.एम.एस.पी.एफ.ए. जारी किया गया जिसके तहत ईस्ट्रोजन—प्रोजेस्ट्रोन, क्लौरम्फेनिकोल—स्ट्रेप्टोमाइसीन, स्टोरॉइड्स मूल दवाओं का व्यापार प्रतिबन्धित किया गया। लेकिन विभिन्न ब्रांड नामों से बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ आज भी इन दवाओं का व्यापार कर रही हैं।

1. ई. पी. फोर्ट	युनीकेम	अत्यन्त घातक
2. मेस्ट्रोजन फोर्ट	इन्फार	गर्भवती महिलाओं द्वारा प्रयोग करने पर
3. ओरसेक्रोन फोर्ट	निकोलस	अपंग बच्चे पैदा होने का खतरा
4. ओगल्यूटिन	इन्फार	सामान्य स्थिति में लेने पर महिलाओं के मासिक धर्म में गड़बड़ी पैदा कर देती है।

8. ऑक्सीपोज
9. लार्जेसिक
10. न्यूरोजेसिन
11. सुगंनरिल
12. ऑक्सीजोन
13.पैराबूटाजोन
14.क्लिओक्विनाल
15. एम्बिक्विनाल
16. एलीक्विन
17. एम्बीजाइम फोर्ट
18. एमीक्योर
19. एमीक्लीन
20. एमीजील प्लस
21.क्लोरोपेक्टिडीन
22.डायडोक्वीन

जापान, नार्वे, स्वीडन जर्मनी, डेनमार्क, नेपाल बांग्लादेश, फिलीपीन स्पेन, फ्रांस, श्रीलंका, समेत दुनिया के तमाम देश

लोगों की मौत हो चुकी है। प्रतिबन्धित देशों में इसे 'बी' श्रेणी का जहर घोषित किया गया है।

पैरों को लकवा मार जाता है तथा व्यक्ति के अन्धा होने का बराबर खतरा रहता है। इनके सेवन से जापान में 10,000 लोग लंगड़े और अन्धे हो गए।

1983 में प्रतिबन्धित दवाएँ

भारत सरकार ने 23 जुलाई 1983 में गजट नोटीफिकेशन एक्स 11014/2/83 डी.सी.एम.एस एस. एण्ड पी.एफ.ए. के तहत 27 प्रकार की मूल दवाओं का निर्माण और व्यापार प्रतिबन्धित किया। लेकिन इनमें से कुछ दवायें अभी भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा बनायी और बेची जा रही हैं। इन दवाओं के नाम निम्न हैं।

दवाओं के नाम	निर्माता बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ	घातक प्रभाव
1. सिनेल्जेसिक	ज्यौफी मैनर्स	अत्यंत घातक, पसीना द्वारा शरीर के तापमान को नियन्त्रित करने वाली विधि को नुकसान पहुँचाती है।
2.एक्रोमाइसिन	सायनामिड	अनुपयोगी, जिनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
3. टेट्रामाइसिन	फाईजर	
4. डेकाबोलिन	इन्फर	अत्यंत घातक, यदि मरीज को ये दवायें देते रहने के बाद अचानक बन्द कर दी जाय तो गुर्दे खराब होते हैं तथा ब्लड प्रेशर गिर जाता है।
5. हिस्टाप्रेड	वेथ	
6. पैरोकोर्ट	थेमिस केमिकल्स	
7. पेरोड्रान मेरमिड		

डॉक्टरों द्वारा बहिष्कार

स्वीडन में 3 हज़ार से अधिक डॉक्टरों ने सीबागायगी के उत्पादन का बहिष्कार किया क्योंकि यह कम्पनी मैक्साफार्म, एन्ट्रोबायोफार्म, क्लियोक्विनाल जैसी घातक दवाओं का तीसरी दुनिया के देशों में वितरण बन्द नहीं कर रही थी। इस नाम की दवायें तो अब देश में लगभग बन्द हैं लेकिन क्लियोक्विनाल अन्य 18 नामों से अब भी बाजार में बिक रही है।

23. इण्टरोजाइम		
24. आयडोजोल		
25. आयडोसाइक्लिन		
26. मेटाक्वीन		
27. न्यूट्रोजाइम		
28. आयडोहाइड्राक्सिक्वीन		
29. क्विनीजोल		
30. एनाल्जीन	आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया,	अस्थि–मज्जा में श्वेत
31. बेराल्गन	बेल्जियम, बिली, डेनमार्क	रक्त कणिकाओं के
32. बुस्कोपान	फ्रांस, ग्रीस, मिस, इसराइल,	बनने में भारी बाधा
33.बूटाल्जिन	इटली, जापान, कोरिया,	पहुँचती है जिसके
34. फारजेसिक	मेक्सिको, नेपाल, स्वीडन,	कारण हड्डियों एवं
35.मार्लाजिन	अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी,	मांसपेशियों की
36. आक्सीपोज		संरचना में भयंकर
37. सिनाल्जेसिक		विकार उत्पन्न हो जाते
38. जिमाल्जिन		हैं,जो अंततोगत्वा इन्हें
39. अल्ट्राजीन		क्षीण कर इनके
40. फीनोल्जिन		सेवन करने वालों को
41. पामाजिन		निहायत कमजोर कर
		मृत्यु तक पहुँचा देती
		हैं।
42. ए. टी. फोर्ट	आस्ट्रिया, बेल्जियम,	गर्भिणी महिलाओं को
43. मेंस्ट्रोजनफोर्ट	डेनमार्क, ग्रीस, इटली,	दी जाने वाली ये दवाएं
44. ओरोसेक्रान फोर्ट	न्यूजीलैण्ड, नार्वे, सिंगापुर,	गर्भस्थ शिशुओं को
45. ओरगालुटीन	दक्षिणी अफ्रीका, थाईलैण्ड,	विकलांग कर देती हैं।
46. ओस्टरोन	ब्रिटेन, अमरीका, जर्मनी,	यदि बिना गर्भवती
47. एस. जी. फोर्ट	बांग्लादेश आदि	महिला को दे दिया
48.क्लोरोस्ट्रेप	बांग्लादेश, साइप्रस, डेनमार्क	जाय तो मसिक धर्म
49. कूपर स्ट्रेप	इटली, जापान	अनियमित हो जाता है
50. क्लोरोम्फेनिकाल	नेपाल, नार्वे, फिलीपींस,	अस्थि–मज्जा को
एण्ड स्ट्रेप्टोमाइसिन	स्वीडन, वेनेजुएला,	क्षतिग्रस्त कर श्वेत
51. इन्टरोस्ट्रेप	पाकिस्तान, मलेशिया	रक्त कणिकाओं के
52. इंटेस्टोस्ट्रेप		बनाने में बाधा उत्पन्न
53. स्ट्रेप्टोफेनिकाल		करती हैं तथा शरीर की

54. ओराबोलीन	बांग्लादेश, ब्रिटेन समेत	प्रतिरोधक क्षमता
55. ड्यूराबोलीन	तमाम देशों में प्रतिबन्धित	समाप्त कर मृत्यु की
56. डेकाड्यूराबोलीन		ओर ढकेलती हैं।
57. ब्रुफेन		भारत में बच्चों को दिये
58. इवाबोलीन	ब्रिटेन, अमरीका समेत	जाने वाले ये ड्राप बच्चों
59. नोवाल्जिन	कई देशों में प्रतिबन्धित	में विकास सम्बन्धी
60. एस्पिरिन		विकार पैदा करते हैं।
61. काइमर	सभी विकसित देशों में	इनके और कई भयंकर

1990–91 में प्रतिबन्धित दवाएं

सरकार ने 26 दिसम्बर 1990 तथा 11 फरवरी 1991 को जारी आदेशों द्वारा क्रमशः पाँच और दस प्रकार की जेनरिक दवाइयाँ प्रतिबन्धित की थी लेकिन इन जेनरिक दवाओं के प्रचलित ब्रांड नामों को प्रतिबन्धित सूची में न डालने की वजह से आज भी ये दवाइयाँ बाजार में खुले रूप से बिक रही हैं। इन दवाइयों में प्रमुख रूप से दर्दनाशक, कफ सीरप और टॉनिक आदि हैं इनकी सूची दी जा रही है।

1. ब्युटा प्राक्जीवान	बोकार्ड लिमिटेड	इनका अधिक इस्तेमाल दर्द निवारक के रूप में होता हैं। लेकिन ये अंतड़ियों में घाव भी करती हैं और प्रतिरोधक क्षमता नष्ट करती हैं।
स्पाज्मो प्राक्जीवन	बोकार्ड लिमिटेड	
प्राक्जीवान	बोकार्ड लिमिटेड	
कार्ब्यूंटाइल	रसल्स इंडिया लि.	
वालाजेसिक	कार्टर वालेस इंडिया लि.	
वेगानिन	ईस्ट इंडिया लि.	
फोर्टजेसिक	विनथ्रोप इंडिया लि.	
2. मान्टोरिप	प्लेथको फार्मा	प्रतिरोधक क्षमता नष्ट करती है।
3. ड़िकेरिस	एथनार इंडिया लि.	एक प्रकार का जहर जो पेट के कीड़े मारने में इस्तेमाल होता है।
जेटमिसोल–पी.	एथनार इंडिया लि.	
4. जेफराल	मे एण्ड बेकर इंडिया लि.	ये सभी कफ सीरप हैं। डाक्टरों के मुताबिक कफ सीरप गैर जरूरी है।
ल्यूपीहिस्ट	ल्यूपिन इंडिया लि.	
टिक्सीलिक्स	मे एण्ड बेकर इंडिया लि.	
कोरेक्स	फाइजर इंडिया लि.	
5. ट्यूब्साइन	ग्रीफाइन इडिया लि.	खांसी में इस्तेमाल की जाने वाली गोलियाँ जो तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती हैं।

62. काइमोरल	प्रतिबन्धित	कुप्रभाव भी होते हैं।
63. काइमोरल फोर्ट		आँतों में घाव कर
64. अल्फाप्सिन		अल्सर बनाती हैं।
65. स्पैसिमिजाल	अर्जेंटाइना, ब्रिटेन,	ये दवाइयाँ बिल्कुल
66. पाखाफोर्ट	आयरलैण्ड, इजराइल,	अप्रभावी है तथा इनकी
67. जागरिल	फिलीपींस आदि	क्षमता सन्दिग्ध है।
68. बेटाफ्लाम		
69. एस. जी. पाइरिन		
70. इंटरोक्विनाल	डेनमार्क़, डॉमिनियन गणराज्य	
71. डिस्फर प्लस	इटली, नार्वे, जापान, स्वीडन	
72. इन्ट्रोबायोफार्म	फिलीपींस, सउदीअरब, नेपाल	
73. मेक्साफार्म	वेनेजुएला, साइप्रस आदि	
74. पाइरोलान	नेपाल सहित विश्व के	
75. सिनाल्जेसिक	तमाम देश	
76. ब्रोमोसेडान		
77. ब्रोमोवेलेरेट		
78. एसीटोफेनेटाइडिन	कनाडा, चिली, साइप्रस	यकृत और गुर्दे को क्षति
79. फेनासिटीन	डेनमार्क, इटली, ब्रिटेन आदि	पहुँचाती हैं।
80. एक्रोमाइसिन	इटली; नेवाल, स्वीडन,	इन दवाओं में मौजूद
82. डोकाबोलीन	विश्व के तमाम देशों में	विटामिन सिर्फ दाम
83. हिस्टाप्रेड	प्रतिबंधित	बढ़ाने के सिवाय कोई
84. पेरीकार्ट		काम नहीं करता।
85. पेरीड्रान		
86. इरगोफेन		
87. माइग्रिल		
88. माइग्रेनिल		
89. स्टीप्टोमेंट		
90. टेट्रासाइक्लिन थोरान.	बांग्लादेश, डेनमार्क	बच्चों के दाँत भूरे रंग
91. ट्राइनार्जिक	इटली, जार्डन, न्यूजीलैण्ड	के हो जाते हैं
	पेरू आदि	शरीर पर भयंकर
92. रेस्टिल	ग्रीस, इटली, नार्वे, स्वीडेन	कुप्रभाव डालती हैं।
93. कामस्लिप	वेनेजुएला	घातक जहर की तरह
94. प्लासीडाक्स 2	बांग्लोदेश, नेपाल	प्रभाव डालती हैं।
95. प्लासीडाक्स 10		तंत्रिका तंत्र पर बुरा
96. प्लासीडाक्स 5		प्रभाव डालती हैं।

विदेशी कम्पनियों द्वारा निर्मित गैर जरूरी टॉनिक और उनके विकल्प

लोगों का यह मानना है कि टॉनिक का सेवन करने से आदमी स्वस्थ हो जाता है। यह तथ्य पूर्णतया भ्रामक है। वस्तुतः एक स्वस्थ शरीर के लिए टॉनिक की कोई आवश्यकता नहीं होती है। आजकल टॉनिक का सेवन एक फैशन की तरह हो गया है। एक महँगे किस्म के टॉनिक के दाम के दसवें हिस्से से भी कम मूल्य के संतुलित आहार से कहीं ज्यादा पोषक तत्व प्राप्त होते हैं। आमतौर पर टॉनिक में पाये जाने वाले तत्वों का असर दो या तीन घण्टे तक ही रहता है। हालांकि सभी टानिकों में कुछ विटामिन, खनिज, एन्जाइम ओर एल्कोहल होता है लेकिन ये सभी चीजें प्राकृतिक स्रोतों जैसे दूध, चना, फल, सब्जी, अन्न आदि में बहुतायत में मिलते हैं। प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त आवश्यक तत्व मानव शरीर में आसानी से अवशोषित हो जाते हैं तथा दाम की दृष्टि से भी सस्ते पड़ते हैं। लेकिन प्रचार तथा भ्रामक बयानबाजी से विदेशी कम्पनियाँ लगभग 1000 करोड़ रूपये सालाना केवल टॉनिक से कमाती हैं। गैरजरूरी तथा अनेक आकर्षक नामों से टानिक बनाकर ये कम्पनियाँ हमारे ऊर्जा तथा आवश्यक पोषक तत्वों के परम्परागत स्त्रोतों को गौण बनाकर पूरे भारत में टॉनिक संस्कृति फैला रही हैं। आगे दी गयी सूची में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा बनाए गए टानिकों की लम्बी फेहरिस्त तथा उनके परम्परागत प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक विकल्प बताये गए हैं।

ऊर्जा तथा शक्ति देने के नाम पर बिकने वाले टॉनिक

टानिक का नाम	निर्माता बहुरष्ट्रीय कम्पनी	विकल्प
1. बूस्ट	स्मिथलाइन बीचम कंज्यूमर ब्राण्ड लि.	इनके घरेलू स्त्रोत दूध,
2. हार्लिक्स	स्मिथलाइन बीचम कंज्यूमर ब्राण्ड लि.	दही, घी, चना,
3. कॉम्प्लान	स्मिथलाइन बीचम कंज्यूमर ब्राण्ड लि.	मूँगफली, फल एवं
4. स्पर्ट	वान्डर (इण्डिया) लि.	सब्जियाँ हैं। संतुलित
5. प्रोटीनेक्स	फाइजर लिमिटेड	आहार लेने के पश्चात्
6. बोर्नविटा	कैडबरीज (इण्डिया) लिमिटेड	इनकी कोई –

विटामिन युक्त कहे जाने वाले टॉनिक

टानिक का नाम	निर्माता बहुरष्ट्रीय कम्पनी	विकल्प
7. सेन्टीविनी	सैण्डोज (इंडिया) लि.	आवश्यकता नहीं
8. बी–काडेक्सामीन	ग्लैक्सो(इंडिया) लि.	होती। अति आवश्यक
9. बी.जी.फास	मेरिन्ड (इंडिया) लि.	होने पर च्यवनप्राश
11. प्रैक्टिन	मेरिन्ड (इंडिया) लि.	आदि का सेवन किया
12. प्रोन्यूट्रीन	सी. एफ. एल. फार्मा	जा सकता है विटामिन
13. नर्वीटोन	एलेम्बिक केमिकल्स वर्क्स कं. लि.	युक्त कहे जाने वाले
14. मीटाटोन	पार्क डेविस (इंडिया) लि.	टानिक ये टॉनिक भूख
15. न्यूरोफास्फेट्स	एस्केफ लिमिटेड	बढ़ाने, भोजन पचाने

16. सिल्टान	ड्यूफर लि.(इंडिया)	तथा विटामिनों की
17. काइने[illegible]	बूट्स [illegible] फार्मास्यूटिकल्स लि.	कमी से होने वाले रोगों
18. साइपान सिरप	जीनो फार्मा (इंडिया) लि.	में प्रयुक्त होते हैं।
19. न्यूटीफिल	बार्नर लैम्बर्ट कम्पनी	भूख बढ़ाने वाले ये
20. एम्बेलिक्स	मे एण्ड बेकर (इंडिया) लि.	टानिक असहज ढंग से
21. मार्विटा	फार्म्ड (इंडिया) लि.	शरीर की तंत्रिका
22. ओरहेप्टाल	ई. मर्क (इंडिया) लि.	तंत्र पर प्रभाव डालकर
23. सिक्साप	फ्रैंको इण्डियन लिमिटेड	शरीर में विकृतियाँ पैदा
24. बीटाहेक्स्ट	हेक्स्ट इंडिया लिमिटेड	करते हैं। सभी प्रकार
25. बीटाप्लेक्स इलिक्सिर	ईस्ट इण्डिया कम्पनी	के विटामिनों का अच्छा
26. जेविट	एस्केफ लिमिटेड	स्रोत दूध, दही, हरी
27. बीकासूल	फाइजर लिमिटेड	सब्जियाँ,टमाटर, नींबू,
28. न्यूगेडाइन इलिक्सिर	रेस्टाकास ब्रेट (इंडिया) लि.	हरा मिर्चा, घी, मूली,
29. रिवाइटल	रैनवेक्सी (इंडिया) लि.	आँवला, पपीता,
30. बायर्स टानिक	बायर कम्पनी लिमिटेड	गाजर तथा विभिन्न
31. हेमीफास	जर्मन रेमेडीज	फल हैं। विशेष
32. केलरान	ईस्ट इण्डिया कम्पनी	परिस्थितियों में
33. रैनोकेब	जर्मन रेमेडीज	द्राक्षासव, अंगूरासव,
34. स्टेप्टोमेग्मा	जानविथ (इंडिया) लि.	अश्वगंधारिष्ट आदि
35. डिपेन्डल—एम	एस्केफ (इंडिया) लि.	आयुर्वेदिक टानिक
36. एनीमिडाक्स	ई. मर्क इण्डियन लि.	लिये जा सकते हैं।

लौह युक्त कहे जाने वाले टानिक

37. डेक्सोरेन्ज	फ्रैंको इण्डियन लि.	ये टानिक रक्ताल्पता
38. आऊट्रीन	सायनामिड (लिडरले)	(एनीमिया) में प्रयुक्त
39. बीनोजेन	रैलीस (इण्डिया) लि.	होते हैं।दूध, सेब, हरी
40. कैप्सोविट फोर्ट	फार्म्ड़ (इण्डिया) लि.	सब्जियाँ, गन्ने का रस,
41. ड्यूमास्यूल्स	फाइजर (इण्डिया) लि.	गुड़, आँवला तथा
42. फर्सी	एल्केम (इण्डिया) लि.	पालक का साग सेवन
43. फेरोंचिलेट	अल्वर्ट डेविड	करने से एनीमिया
44. फर्विट	बाल्टर बुशनैल	की कोई संभावना नहीं
45. फीजोफोरजेड	इस्केफार्मा (इण्डिया) लि.	रहती तथा इन टानिकों
46. फीजोविटस्पैन्स्यूल	इस्केफार्मा (इण्डिया) लि.	के हानिकारक प्रभावों
47. फीलोनेट बी	एलेम्बिक केमिकल वर्क्स लि.	से बचा जा सकता है।
48. हीमेट्रिन	सैण्डोज (इण्डिया) लि.	विशेष परिस्थितियों में

49. हेम्फर	एल्केमज (इण्डिया) लि.	लौहतत्व का सेवन
50. इम्फराल	रैलीस (इण्डिया) लि.	किया जा सकता है।
51. जैक्टोफर	सी.एफ.एल. फार्मा लि.	

एक बंगाली बुनकर महिला की कहानी

तमाम इतिहासकारों ने भी इस बात को माना है और महात्मा गांधी का तो समूचा दर्शन ही स्वदेशी पर टिका था। अंग्रेजों के पहले का भारतीय समाज अपेक्षाकृत ज्यादा खुशहाल था। अपने पर टिके इस समाज को अंग्रेजी व्यवस्था ने छिन्न–भिन्न कर दिया। यह बात कार्ल मार्क्स भी मानते थे। श्री धर्मपाल ने अपनी किताब में एक बंगाली स्त्री के पत्र का उद्धरण दिया है जो 1928 में एक बंगला अखबार समाचार दर्पण में छपा था। पत्र के कुछ अंश प्रस्तुत है :

"मैं एक बुनकर हूँ। काफी दु:ख सहने के बाद मैं यह चिट्ठी आपको लिख रही हूँ। कृपया इसे अपने पत्र में छाप दीजियेगा। मैंने सुना है कि अगर यह आपके यहाँ छप गयी तो इसकी आवाज उन लोगों तक पहुँच जायेगी जो मेरी तकलीफ को कुछ कर की सकते हैं।"

महिला ने लिखा है कि वह 22 साल की उम्र में विधवा हो गयी थी। उसकी तीन लड़कियाँ थीं। उनकी शादी और घर का कारोबार उसी को सम्भालना था।

"ईश्वर ने मुझे रास्ता दिखाया और मैंने तक़ली और चर्खा पर सूत कातना शुरू किया। सबेरे मैं घर का कामकाज निपटाकर चर्खे पर कातने बैठ जाती थी और दोपहर को उठती थी। सास–ससुर और बच्चों को खिलाकर और खुद खाकर मैं फिर तकली कातने बैठ जाती। इस तरह रोज एक तोला सूत कात लेती थी। बुनका हमारे घर आकर एक रूपये प्रति तोला के हिसाब से उसे ले जाते थे। कभी मुझे अग्रिम पैसे की जरूरत पड़ती तो मैं माँग सकती थी। इससे हमारे भोजन और कपड़े की चिंतायें मिट गयीं।" वह आगे लिखती है, "कुछ सालों में मेरे पास 28 रुपये जुड़ गये और मैंने अपनी एक लड़की की शादी कर दी। इस तरह मैंने अपनी तीनों लड़कियों की शादी कर दी। मैंने अपनी बिरादरी की सभी रस्में पूरी की। कोई मेरी लड़कियों को नीची निगाह से नहीं देखता क्योंकि मैंने अपनी जात–बिरादरी के लोगों और घटक का जो पावना होता है वह सब उन्हें दिया। जब मेरे ससुर मरे तो मैंने 44 रूपये उनके श्राद्ध पर खर्च किये। यह पैसा मुझे बुनकर से कर्ज मिला था जिसे मैंने साल–डेढ़ साल में चुका दिया। यह सब चर्खे की कृपा थी। अब तीन साल से मैं और मेरी सास भूखों मरने की हालत में हैं। बुनकर हमारे यहाँ कता सूत लेने नहीं आते। यही नहीं यदि उसे हम बाजार में बेचने जायें तो भी वह एक चौथाई दाम पर भी नहीं बिकता। मुझे नहीं मालूम ऐसा कैसे हुआ। मैने बहुत से लोगों से उसके बारे में पूछा : वे कहते हैं कि अब बड़े पैमाने पर विलायती सूत मँगाया जाने लगा है। बुनकर उसी को खरीदते हैं और उसी से बुनते हैं।"

बहिष्कार : सामाजिक परिवर्तन का सशक्त हथियार

'बहिष्कार' एक ऐसा हथियार है जिसके जरिये तीसरी दुनिया के गरीब मुल्कों की जनता दुनिया के धनी देशों के खूँखार साम्राज्यवादी चंगुल से मुक्ति पा सकती है। बहिष्कार अभय का हथियार है। यह हिंसा और आतंक पर टिकी सत्ता का नकार है। यह व्यक्ति एवं समाज को निर्भय कर उसे सत्ता की निरंकुशता के खिलाफ विद्रोह की शक्ति प्रदान करता है। दुनिया के तमाम देशों की जनता ने अत्याचारी शासन तंत्रों के खिलाफ समय–समय पर बहिष्कार के हथियार का इस्तेमाल किया और विजय हुई। अमरीका में इंग्लैण्ड के खिलाफ व्यापक स्तर पर बहिष्कार हुआ। सच कहा जाय तो बहिष्कार वह डायनामाइट है जो गुलामी के बड़े–बड़े पहाड़ों को तोड़ देता है। इसलिए 'ना' कहने का साहस पैदा करना सत्यान्वेषी की प्रथम जरूरत है।

भारत में भी बहिष्कार के अद्‌भुत प्रयोग हुए हैं। अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई के दौरान बहिष्कार को सशक्त हथियार के रूप में इस्तेमाल किया गया। 1905 के 'बंगाल विभाजन' के विरोध में उपजे जनाक्रोश ने स्वदेशी आंदोलन का रूप लिया और बहिष्कार का ब्रह्मास्त्र के रूप में इस्तेमाल किया। इतिहासकार डॉ. के. पी. दुबे लिखते हैं :"शिक्षक, छात्र, वकील, नौजवान, डॉक्टर और मरीज, जमींदार और किसान, सवर्ण और अवर्ण, पुरोहित, नाई, धोबी, लुहार, कुम्हार आदि सभी ने स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया। ब्राह्मणों ने एक सभा करके विदेशी नमक और चीनी का प्रयोग करने वालों के यहाँ पूजा–पाठ न करने का ऐलान किया। पुरोहितों ने तय किया कि जो वर–वधू विदेशी वस्त्र पहने होंगे उनका वे विवाह–संस्कार नहीं करायेंगे। धोबियों ने यह शपथ ली कि वे विदेशी वस्त्र नहीं धोयेंगे। बाँकुड़ा के मिठाई बनाने वालों ने घोषणा की कि यदि उनमें से कोई मिठाई बनाने के लिए विदेशी चीनी का इस्तेमाल करेगा तो उसे एक सौ रूपया जुर्माना देना पड़ेगा। डॉक्टरों व मरीजों ने विदेशी दवाएँ न प्रयोग करने का निश्चय किया। छात्रों ने विदेशी सिगरेट, क्रिकेट के बल्लों, फुटबाल और वस्त्रों की होली जलाई। विदेशी माल बेचने वालों की दुकानों पर धरना दिया गया। विदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करने वालों का सामाजिक बहिष्कार किया गया। स्वदेशी आन्दोलन और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार ध ीरे–धीरे देशव्यापी बन गया।"

"स्वदेशी आन्दोलन को प्रभावशाली बनाने के लिये अनेक तरीके अपनाये गये थे। विदेशी वस्तुओं का होलिका–दहन, स्वयंसेवकों का संगठन, लोक गीतों का गायन, धरना, जुलूस आदि के माध्यम से स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग न करें। स्वयंसेवकों द्वारा विदेशी वस्तुओं को एकत्र कर उनका दहन किया जाता था। इसी प्रकार नवयुवक तथा विद्यार्थी प्रायः दुकानों के पास खड़े रहते थे और लोगों से विदेशी माल न खरीदने का आग्रह करते थे। यदि कभी कोई व्यक्ति विदेशी माल खरीद लेता था तो नवयुवक उसको उस वस्तु का मूल्य देकर उससे विदेशी माल ले लेते थे और उस माल का होलिका दहन कर देते थे। कहना न होगा कि सामाजिक बहिष्कार का यह हथियार बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। इस भावना ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष को सशक्त बनाया।

कॉलगेट की असलियत

पिछले दिनों एक विशेष बात पता चली, सोचा आपके साथ बाँट लूँ। बात है कि अमेरिकन लोग अपने बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति बहुत सावधान रहते हैं, इसलिये शायद अमेरिका में टूथ–पेस्ट बनाने वाली कंपनी अपने टूथ–पेस्ट पर ठोस और साफ तरीके से सूचना तथा चेतावनी छापती है कि ....

2 से 6 साल के बच्चों के लिए : केवल मटर के दाने जितना ही पेस्ट इस्तेमाल करें और बच्चे के ब्रशिंग तथा कुल्ला करने पर नजर रखें ताकि बच्चे कम से कम मात्रा में पेस्ट निगलें। 2 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए : अपने डेंटिस्ट या फिजिशियन से पूछें। चेतावनी : 6 साल की उम्र से छोटे बच्चों की पहुँच से दूर रखें। आकस्मिक निगलने की दुर्घटना पर तुरंत डॉक्टर या पॉईजन कंट्रोल से संपर्क करें।

सबूत में अगले पृष्ठ पर अमरीका में बिकने वाले ऐसे टूथ–पेस्ट के डिब्बे (कार्टन) का फोटो छपा हुआ है। उस पर छपी हुई डायरेक्शन (Direction) तथा वार्निंग (Warning) गौर से पढ़ें।

ऐसी ही चेतावनी अमेरिका में बिकने वाली 1) कोलगेट टोटल, 2) कोलगेट टार्टर कंट्रोल, 3) कोलगेट वाइटनिंग विथ वकिंग सोडा एन्ड पेराक्साईड, 4) कोलगेट कैविटी प्रोटेक्शन जेल, 5) कोलगेट कैविटी प्रोटेक्शन आदि सभी टूथ–पेस्टों पर छापी जाती है। भारत में बिकने वाली उसी कंपनी की टूथ–पेस्ट पर ऐसी कोई चेतावनी नहीं छापी जाती! क्यों? क्या कारण है इसका? हमारे बच्चों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाला यह कैसा सुरक्षा चक्र? क्या भारतीय बच्चों की जिंदगी इतनी सस्ती है?

हमारे बच्चों की जिंदगी इतनी सस्ती है क्या? इस सवाल को आप का सीधा सा जवाब होगा ... "देखा? अमेरिका में ऐसा वैसा कुछ नहीं चलंता। वे लोग आरोग्य के प्रति सतर्क रहते हैं। खास कर छोटे बच्चों के लिये वहाँ के कानून भी बहुत सख्त होते हैं।"

परंतु क्या यही सही और इतना ही जवाब है? क्या सच कुछ और नहीं है? इस पर कोई कहेगा ..... इनके देश में बिकने वाली टूथ पेस्ट में फ्लोराईड है, जो जहरीला होता है। इसलिये ऐसी चेतावनी छापी जाती है। हमारे देश में बिकने वाला टूथ पेस्ट नानफ्लोरीडेटेड होती है। ....कबूल। शास्त्रीय ज्ञान कहता है दाँतों की सड़न रोकने के लिए फ्लोराईड आवश्यक होता है। हमारे देश में बिकने वाली टूथ पेस्ट पर छपी बातों से यह स्पष्ट संदेश मिलता है कि "यही टूथ पेस्ट दाँतों की सड़न रोकता है"। और साथ में "वह नान फ्लोरीडेटेड है "ऐसा भी छपा हुआ रहता है. इन दोनों में सच क्या है? क्या हम इसे ग्राहक को, तथा कानून को गुमराह करना कह सकते हैं? इस पर कोई कहेगा हमारे पानी में ही आवश्यक मात्रा में फ्लोराइड होता है, इसलिये टूथ पेस्ट में अलग से मिलाने की जरूरत नहीं होती है। ......कबूल।.......................फिर दाँतों की सड़न पानी रोकता है या टूथ पेस्ट?

विकसित देशों में बिकने वाली टूथ पेस्ट में क्या–क्या मिलाया हुआ है यह (ईनग्रेडियंट्स) छपा हुआ रहता है। एक्सपायरी डेट भी छपी हुई रहती है। हमारे देश में क्यों नहीं? इस पर कोई कहेगा हमारे अन्न व औषधि प्रशासन के अनुसार (एफ.डी.ए) ऐसा छापना आवश्यक नहीं।..................यही भी कबूल।

परंतु हमारे नियम और कानून बनते ही हैं विदेशियों के कहने के अनुसार, उनके दबाव में आकर, उनके फायदे के लिए। इस सत्य का कोई भी भारतीय नागरिक, अधिकारी, सत्ताधारी, विचारवंत इन्कार करने का साहस कर सकते हैं क्या? हमारी 'गोरी चमड़ी के प्रति मोह' की गुलाम मानसिकता का विदेशियों ने भरपूर लाभ उठाया। फायदे के लिए नियम और कानून बना लिए। लाइसेंस प्राप्त कर लिए। भारतीय जनता पर उत्पादन लादकर उसे गुमराह करने का बहुराष्ट्रीय कंपनियों का यह खेल खुले आम इस देश में चल रहा है।..................अब हम क्या करें?

देश की निकम्मा और नाकारा सरकार कुछ करेगी ऐसी झूठी उम्मीद पर न बैठें।

हमें हमारी प्रगति की व्याख्या बदलनी होगी। औषधि गुणधर्म से भरपूर नीम, बबूल, आम तथा कई और पेड़ों का दातून, उँगलियों से मसूढ़ों को मसाज करवाने वाला गुणकारी दंतमंजन छोड़कर टूथ पेस्ट और ब्रश का उपयोग, इसका अर्थ प्रगति है यह गलतफहमी हमें मन से निकाल देनी होगी। हमें हमारी परंपरागत पद्धति अपनाने का समय फिर से एक बार आ गया है। (नीम के औषधि गुणधर्म जानकर अमेरिका में उस पर कई पेटेंट्स लिए गये हैं)

कोल्डड्रिंक पीने से मृत्यु भी हो सकती है ???

किसी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् अग्निदाह संस्कार में देशी घी डाला जाता है जिससे पूरा शरीर जल जाता है व हड्डियाँ भी काफी हद तक जल जाती हैं परंतु दाँत बिल्कुल नहीं जलते। इसी तरह, यदि दाँत को मिट्टी में गाड़ दें व 20 साल के बाद निकालें तो भी दाँत बिल्कुल नहीं गलते हैं।

जिस दाँत को घी की आग नहीं जला सकती है, मिट्टी नहीं गला सकती है उसे किसी भी कोल्डड्रिंक में डालने पर ज्यादा से ज्यादा 20 दिन में पूरा घुल जाता है तथा छानने पर भी दिखाई नहीं देता है।

कारण – कोल्डड्रिंक में फास्फोरिक एसिड (तेजाब) नामक जहर होता है (फोटो देखें) जो मनुष्य के शरीर के सबसे कठोर अंग यानि दाँत को ही नहीं बल्कि दुनिया की अधिकतर वस्तुओं, यहाँ तक की लोहे को भी पूरी तरह से खा जाता है। अब आप सोचिये कि कोल्डड्रिंक पीने पर यह शरीर के कई नाजुक अंगों के सम्पर्क में आता है तो उनका क्या हाल होता होगा। चूंकि कोल्डड्रिंक में बहुत पानी होता है इसलिए इसका असर धीमे–धीमे होता है व तत्काल दिखाई नहीं देता है।

अहमदाबाद स्थित कंज्यूमर एजूकेशन एंड रिचर्स सेन्टर द्वारा जाँच करने पर कोल्डड्रिंक में कार्बोलिक ऐसिड, एरिथारबिक एसिड व बेंजोइक एसिड नामक तेजाब भी पाये गये। रसायन विज्ञान का कोई भी विद्यार्थी जानता है कि किसी भी एसिड कि तीव्रता PH पेपर से पता की जा सकती है। PH 7 से जितनी कम होगी, एसिड उतना तीव्र होगा। कोल्डड्रिंक की PH तीव्रता लगभग 2.4 होती है। इसी कारण कोल्डड्रिंक पीने पर गले व पेट में जलन, डकारें, दिमाग में सनसनी, चिड़चिड़ापन तथा एसिडिटी हो जाती है। ध्यान रहे कि कई फलों व सब्जियों जैसे नारंगी, नींबू, कैरी में भी एसिड होते हैं प्राकृतिक रूप में होने से शरीर में जाकर क्षार में बदल जाते हैं तथा शरीर की एसिडिटी कम करने का कार्य करते हैं जबकि कोल्डड्रिंक में एसिड कृत्रिम रूप में होने के कारण खतरनाक होते हैं।

घर में संडास साफ करने में इस्तेमाल होने वाले हाइड्रोक्लोरिक एसिड की PH तीव्रता कोल्डड्रिंक के बराबर है। क्या ऐसे कोल्डड्रिंक को पीना चाहिये या ..... ?? जरा सोचिये !!!

शरीर विज्ञान के अनुसार हर प्राणी सांस के माध्यम से हवा में विद्यमान ऑक्सीजन (प्राण वायु) लेता है तथा शरीर में उत्पन्न कार्बन डाइ आक्साईड (CO_2) नामक जहरीली गैस बाहर निकाल देता है। हर कोल्डड्रिंक में CO_2 डाली जाती है जिससे यह लम्बे समय तक खराब न हो। कोल्डड्रिंक पीने पर शरीर इसे नाक व मुँह के माध्यम से वापस बाहर निकाल देता है। यदि कभी गलती से CO_2 बाहर न निकल पाये तो मृत्यु निश्चित है।

हाल ही में सरकार ने कानून बनाया है कि गाड़ियों में सिर्फ सीसा रहित (अनलीडेड) पेट्रोल ही उपयोग किया जाए क्योंकि सीसा ईजन में जलता नहीं है व धुएँ के

साथ बाहर निकलकर हवा को प्रदूषित करता है। हवा में सीसे की मात्रा 0.2 ppm से अधिक होने पर लोगों द्वारा इसमें सांस लेने पर यह स्नायुतंत्र, मस्तिष्क, गुर्दों, लीवर व मांसपेशियों के लिए घातक होता है।

कोकाकोला व पेप्सीकोला दोनों अमरीका की कम्पनियाँ हैं तथा वहाँ अधिक जागरूकता के कारण बेचे जाने वाले कोल्डड्रिंक में 0.2ppm से कम सीसा डाला जाता है जबकि इन्हीं बेईमान कम्पनियों द्वारा भारत में "सब चलता है." की तर्ज पर कोल्डड्रिंक में 0.4ppm सीसा डाला जाता है।

कोलाब्राण्ड के कोल्डड्रिंक में कैफीन डाला जाता है जो अधिक मात्रा में लेने पर बेचैनी, अनिद्रा व सिरदर्द पैदा करता है। ये बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अमरीका व यूरोप में 88ppm से कम कैफीन डालती हैं जबकि भारत में 111ppm तक कैफीन उपयोग करती हैं। जाँच करने पर कोल्डड्रिंक में कई अन्य जहरीले रसायन भी पाये गये, जैसे – आर्सेनिक, कैडमियम, जिंक, सोडियम ग्लूटामेट, पोटैशियम सोरबेट, मिथाइल बेंजीन, ब्रोमिनेटेड वेजिटेबल ऑयल अत्यादि। विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कोल्डड्रिंक को 'धीमा जहर' घोषित किया है।

गौरतलब है कि एस्परटेम से बच्चों में ब्रेनहेम्रेज (मस्तिष्काघात) होकर उनकी मृत्यु भी हो सकती है इसलिए बोतल/केन पर चेतावनी लिखी है कि बच्चे इस्तेमाल न करें (फोटो देखें)।

डाक्टर्स के अनुसार कोल्डड्रिंक में पौष्टिक तत्व बिल्कुल नहीं हैं यानि इसमें शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन, विटामिन, वसा, खनिज, कैल्सियम व फास्फोरस में से कुछ भी नहीं है। वहीं दूसरी ओर, दूध औषधीय गुणधर्म वाला पौष्टिक, सुपाच्य व सम्पूर्ण आहार है तथा सिर्फ इसको पिलाने से बच्चे के शरीर का पूर्ण विकास होता है।

कीमत – कोल्डड्रिंक – 10 रु. /300 मिली. बोतल =33 रु./ लीटर (फैक्ट्री लागत 70 पैसे/ बोतल) ....दूध – अधिकतम 16 रु./लीटर

बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हजारों वर्षों से दूध,दही की नदियों की संस्कृति वाले हमारे देश में पिछले 10 वर्षों में आम मानसिकता इतनी विकृत हुई है कि आधुनिकता व Status के भ्रम में लोग दूध से दोगुना से ज्यादा महंगा तथा कई जहरीले रसायनों वाला कोल्डड्रिंक जीवनजल समझकर गटागट पी ही नहीं रहे हैं बल्कि देवता स्वरूप अतिथि को पिला भी रहे हैं।

एक 300 मि.ली. कोल्डड्रिंक की बोतल धोने में लगभग 10 लीटर पानी खर्च होता है। **जिस देश में आजादी के 52 वर्षों बाद भी 2 लाख गाँवों यानि 33 करोड़ जनसंख्या यानि हर तीन में से एक व्यक्ति को पीने के लिए पानी नसीब नहीं होता है, उस देश में कोल्डड्रिंक पीने से बड़ा कोई और पाप नहीं है। जरा सोचिये !!!**

ये दोनों कंपनियाँ साँठगाँठ करके सारी कोल्डड्रिंक्स की एक ही कीमत रखती

हैं। कोल्डड्रिंक में 1000 प्रतिशत से ज्यादा मुनाफा होने के कारण बिक्री बढ़ाने के लिए ये कंपनियाँ करोड़ों रु. खर्च करके फिल्मी सितारों व खिलाड़ियों के विज्ञापन सभी टीवी चैनलों, अखबारों व पत्रिकाओं में बार–बार देती हैं। इनसे बड़ा खेलों व फिल्मों का प्रायोजक पूरी दुनिया में कोई और नहीं है। ये नये–नये लुभावने व सेक्सी विज्ञापनों द्वारा लोगों के मस्तिष्क को पंगु बनाकर पश्चिमी जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं तथा मन में कामेच्छा जगाती हैं।

दुर्भाग्य इस देश का कि कंगाली का रोना रोने वाली सरकार ने जहाँ एक ओर गरीबों को मिलने वाले राशन के अनाज की कीमत डेढ़ गुनी कर दी है वहीं दूसरी ओर इस जहरीले पानी पर एक्साइज ड्यूटी 8 प्रतिशत घटा दी है।

अतः बहिष्कार करें – पेप्सी, लहर, 7 अप, मिरिण्डा, रश, कोक, फेन्टा, स्प्राईट, थम्सअप, लिम्का, गोल्डस्पाटका।

ताजे फलों का रस, मिल्क शेक, नारियल पानी, कैरी पानी, नींबू की शिकन्जी, दूध, दही, लस्सी, जलजीरा, ठंडाई, चन्दन, रूहआफजा, रसना, डाबर फ्रूटी, पारले फ्रूटी, गोदरेज जम्पिन आदि।

मोनसेंटो
दुनिया के खाद्य पर एकाधिकार की तैयारी

पिछले मात्र तीन सालों में जो तूफानी रफ्तार से रॉकेट की तरह आसमान छूने लगी, और जिसने बाजार में अपनी पूँजी 7.5 अरब डॉलर से बढ़ाकर 96 अरब डॉलर (यानी भारत सरकार के साल 1998–99 के बजट से सवा गुना ज्यादा) तक पहुँचाने का कमाल दिखा दिया, जिसने जैव तकनीकी के क्षेत्र में सालाना 46 करोड़ डॉलर शोध पर खर्च करके इस क्षेत्र में क्रांति कर डाली। जो केवल एक साल (1998) में 8 अरब डॉलर पूँजी निवेश कर जैविक इंजीनियरी, पौध उत्पाद (क्रांप ब्रीडिंग), आणविक जीव विज्ञान, खाद्य प्रसंस्करण (फूड प्रौसेसिंग), दवा उद्योग, हर्बीसाइड, पेस्टीसाइड आदि क्षेत्र की ढेर सारी कंपनियों को विलीन करके या खरीद करके दुनिया की सबसे बड़ी कृषि रसायन जीवन उद्योग वाली स्विट्जरलैंड की कंपनी नोवार्टिज को पछाड़ती हुई चोटी पर पहुँच गई, जिसका कारोबार अमरीका, कनाडा, ब्राजील तथा अन्य लातीनी अमरीकी देश, जापान, चीन, भारत और अफ्रीका में फैला हो, और जिसने 78 देशों में अपने उत्पाद पर पेटेंट कराने की पेशकश कर ली हो, जिसके जैव इंजीनियरिंग से तैयार बीज केवल अमरीका में ही लगभग दो करोड़ एकड़ जमीन में बोए गए हैं और जिसका इरादा इस साल इस क्षेत्रफल को दुगना करने का हो, जो दुनिया की सबसे बड़ी हर्बीसाइड उत्पादक हो, जो दुनिया से भूख मिटाने का ऐलॉन करती हो, जिसने टर्मिनेटर टेक्नोलॉजी पर कब्जा करके आदिकाल से बीजों पर दुनिया भर के किसानों के चले आए अधिकारों को छीनने का पुख्ता इंतजाम कर लिया हो और जिसने दुनिया की एक तिहाई आबादी का पेट भरने वाले छोटे और सीमान्त किसानों का सफाया करने का ठान लिया हो, उस दानव कारपोरेशन का नाम है –– मोनसेंटो।

मोनसेंटो का आपराधिक इतिहास

मानसेंटो अमरीका की बहुराष्ट्रीय कंपनी है जिसका मुख्यालय मिसूरी राज्य के सेंट लुई शहर में है। इसके प्रमुख अधिकारी हैं बॉब शैपीरो। यों तो यह कंपनी 96 साल पुरानी है पर पिछले 3 सालों में एक के बाद एक बड़ी कंपनियों को खरीद कर या अपने में मिलाकर इसने दुनिया की सबसे बड़ी दैत्याकार कंपनियों में अपना स्थान बना लिया है। यों तो यह कंपनी अपनी हर्बीसाइड (खरपतवार–नाशक) 'राउंडअप' के लिये मशहूर है और अभी भी इसकी आधे से ज्यादा कमाई इसी से होती है पर अब यह तेजी से बीज और फसलों के क्षेत्र में बढ़ रही है और दुनिया की खाद्य आपूर्ति पर कब्जा करने का इसका इरादा है। यदि जैव तकनींकी की वर्तमान दिशा और तरीकों पर नियंत्रण न हुआ तो कुछ ही सालों में यह कंपनी दुनिया की 5 अन्य कृषि कंपनियों – नोवार्टिज, एग्रोएवो, द्यूपों, जेनेका और डॉव के साथ दुनिया की खाद्य आपूर्ति को हथिया लेगी।

आजकल मोनसेंटो अपने को पर्यावरण का दोस्त और भोजन, स्वास्थ्य और

आशा का झंडाबरदार दिखाने की कोशिश कर रही है। परन्तु उसके चेहरे पर मानवता के प्रति किए गए जघन्य अपराधों के बड़े–बड़े काले धब्बे लगे हुए हैं। वियतनाम युद्ध में जंगलों को साफ करने के लिए मोनसेंटो का सर्बीसाइड 'एजेंट ऑरेंज' नाम इस्तेमाल किया गया। अमरीकी सेना ने वियतनाम पर यह जहर कोई 1.1 करोड़ गैलन छिड़का जिससे 40 लाख हेक्टेयर जमीन प्रदूषित हो गई, फसलें और हरियाली नष्ट हो गई, पानी जहरीला हो गया और केवल उस समय के लोगों की ही जिन्दगी बरबाद नहीं हुई, आगे जो उनके बच्चे पैदा हुए, वे विरूपित और विकलांग पैदा हुए। इसी कंपनी ने एक अन्य रसायन बनाया जिसका नाम है –– पीसी बीज। यह सिद्ध हो गया है कि यह रसायन कैंसर और जन्मदोष पैदा करता है।

पर्यावरण प्रदूषण में मोनसेंटो का जितना बड़ा योगदान है उतना ही छल–फरेबी और हेराफेरी में भी है। अमरीका की पर्यावरण संरक्षण एजेंसी (ईपीए) ने अमरीका में 93 खतरनाक रासायनिक कचरे के ढेरों, जिन्हें 'सुपरफंड साइट' कहा जाता है, के लिए मोनसेंटो को जिम्मेदार माना है और 1995 के अंत तक उस पर 7.1 करोड़ डॉलर का हर्जाना बना था। मोनसेंटो पर अन्य पर्यावरणीय विनाश की भरपाई करने के लिए 9 करोड़ डॉलर की और भी जिम्मेदारी बनी है। इसके बावजूद भी मोनसेंटो ने जहरीले हर्बीसाइड के उत्पादन में कमी नहीं आने दी है। हाँ, वह झूठा प्रचार अवश्य कर रही है कि उसके उत्पादन से निकलने वाली जहरीली गैसों का निकास 90 फीसदी कम करने का उसने जो अभियान 1980 में शुरू किया था, वह 1992 में पूरा हो गया। इस बात के प्रमाण मिले हैं, कि अमरीका की बड़ी सरकारी एजेंसियों जैसे ईपीई और फौज का मोनसेंटो से सीधा सम्पर्क रहा है और इनकी मदद से मोनसेंटो ने अपने अपराध छिपाए हैं। डायोक्सीन को रासायनिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने पर अमरीकी सेना और मोनसेंटो के बीच हुई वार्ता को अभी भी गोपनीय रखा जा रहा है। मोनसेंटो की छल–फरेबी का ज्वलंत उदाहरण है पीसी बीज की सुरक्षा जाँच। जब औद्योगिक जैव परीक्षण प्रयोगशाला में हो रही थी तो मोनसेंटो ने अपने एक टोक्सोकोलिजिस्ट को इस प्रयोगशाला में भर्ती कराकर परीक्षण की जाँच पड़ताल अपने माफिक करा ली। 1974 में ईपीई को पता चला कि हजारों परीक्षण धोखाधड़ी या फिजूल ढंग से किए गए थे। ईपीई के नीति विश्लेषक विलियम एंजूर ने मोनसेंटो के प्रतिवादों को गोबर का ढेर कहा है। अपने अपराधों और छल फरेबी पर पर्दा डालने के लिए मोनसेंटो पिछले 3 सालों से अपने को 'जीवन विज्ञान' की कंपनी के रूप में प्रचारित कर रही है। सावधानी के तौर पर वह अपने खाद्य उत्पादों पर अपने नाम का लेबल नहीं लगाती। वह धुआँधार प्रचार कर रही है कि वह अब रसायन कंपनी नहीं रही। पर नीचे की तालिका उसके झूठ का पर्दाफाश करती है –

1995 में मोनसेंटों के विभिन्न उत्पादों की बिक्री और उससे प्रतिशत आय

रसायन	41 %
कृषि उत्पाद	28 %

दवा	19 %
खाद्य अवयव	12 %

जैसा ऊपर कहा जा चुका है मोनसेंटो का बिकने वाला प्रमुख उत्पाद अभी हर्बीसाइड–'राउण्डअप' है, जो जहरीला रसायन है। इस समय दुनिया में सबसे बड़ी कृषि रसायन कंपनी मोनसेंटो है। 1997 में इस कंपनी की कृषि रसायन बिक्री 631.8 करोड़ जेनेका की 267.4, द्यूपों की 251.8, एग्रोएवो की 235.2, वेयर की 225.4, रॉन–पूलौं की 220, डॉव की 205 करोड़ डॉलर थी। दुनिया को बेवकूफ बनाने के लिए इस कंपनी ने समय–समय पर भ्रामक नारे दिए हैं। 20 साल पहले यह नारा देती थी– *'रसायनों के बिना जीवन ही असंभव है रसायन ठीक हैं, हाँ, जिन्दगी में खतरे हैं।*

मोनसेंटो यह मिथ्या प्रचार कर रही है कि जैव इंजीनियरी से तैयार उसका उत्पाद (आर.बी.जी.एस.) को खिलाने से गाय का दूध बढ़ता है, उसकी दवा से किसानों की आमदनी बढ़ती है और मनुष्यों तथा जानवरों के लिए इसमें कोई नुकसान नहीं है। आरबीजीएस का गायों पर प्रयोग करने वाले 17 फीसदीं अमरीकी किसानों ने इस बात की पुष्टि की है कि इस दवा के प्रयोग से उनका मुनाफा बढ़ा नहीं है। वैज्ञानिक परीक्षणों से पता चला है क़ि यह दवा गायों में 'मैस्टिटीज' नामक गंभीर बीमारी बढ़ाती है जिसके कारण गायों के थनों में सूजन आ जाती है। इससे कोशों में विभाजन पैदा हो जाता है जो कैंसर ट्यूम पैदा करता है। इसी कारण यूरोपीय संघ और कनाडा ने आरबीजीएस पर रोक लगा दी है और यूरोप के कोडेक्स एलीयं मेंटेरियंस आयोग ने इस दवा को सुरक्षित घोषित करने के अमरीकी प्रस्ताव को ठुकरा दिया है।

विश्व विजय के बढ़ते कदम

मोनसेंटो ने अपना साम्राज्य तूफानी रफ्तार से बढ़ाया है। 130 देशों में इसका कारोबार फैल गया है। दुनिया के खाद्य तंत्र पर एकाधिकार करने के इरादे से इसने दोहरी रणनीति अपनाई है। इस रणनीति का एक हिस्सा है बीज तथा कृषि से संबंधित कंपनियों की खरीद और विलय (एक्वीजिशन और मर्जर)। पिछले चार सालों में मोनसेंटो ने निम्नलिखित कंपनियों और संस्थाओं को खरीदा या अपने में मिलाया है :–

1. केल्लो, मर्क का रसायन डिवीजन 1 अरब डॉलर में, 1995 में।
2. रोश से महिलाओं की हेल्थ केयर सुविधाएँ 24 करोड़ डॉलर में, 1995 में।
3. अमरीकी बहुराष्ट्रीय कंपनी डब्यू.आर. ग्रेस की शाखा 'एग्रेसिट्स' की जैव तकनीकी सेवाओं को, कपास और सोयाबीन के पेटेंटों को, 15 करोड़ डॉलर में, 1996 में।
4. कैलीफोर्निया की पौध जैव तकनीकी कंपनी 'कैलजीन' का 49.9 प्रतिशत भाग 1996 में। इस कंपनी ने फैब्र–सैब्र टमाटर चालू किया था।
5. जनवरी 1997 में 'हॉल्डन्स फाउंडेशन सीड्स'। अमरीका में अनुमानतः 25–30 प्रतिशत खेती पर मक्का इसी कंपनी के बीजों से बोई जाती है।

6. नवम्बर 1997 में ब्राजील की बीज कंपनी – 'सेमेंटीज एग्रोसरीज'। इस कंपनी का ब्राजील में मक्का बीज व्यवसाय पर 30 प्रतिशत कब्जा है।
7. सेमीनीज की सोयाबीन कंपनी 'एसग्रो एग्रोनोमिक्स' 26.7 करोड़ में, 1997 में।
8. अक्तूबर, 1997 में अमरीका की जेमोमिक्स कंपनी 'मिलेनियम फार्मास्यूटिकल्स के साथ 11.8 करोड़ डॉलर का 5 साल के लिए सहयोग समझौता, इस समझौते के तहत मोनसेंटो की एक नई शाखा खड़ी की गई है जिसमें लगभग 100 वैज्ञानिक जेनोमिक्स तकनीकी के इस्तेमाल पर मिलेनियम के साथ काम कर रहे हैं।
9. 1998 में मोनसेंटो ने मध्य और लातीनी अमरीका, यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका में कारगिल के अन्तरराष्ट्रीय बीज कारोबार को 1.4 अरब डॉलर में खरीदा। यह धंधा मक्का, सुर्यमुखी और रेपसीड के विकास और मार्केटिंग तथा सोयाबीन, अल्फाल्फा, बाजार, गेहूँ और संकर चावल के बीज के मार्केटिंग का था।
10. 1998 में डेल्टा एंड पाइन लैंड कंपनी को 1.82 अरब डॉलर में खरीद लिया, इससे मोनसेंटो को कपास के बीज के अमरीकी बाजार में 85 प्रतिशत भागीदारी मिल गई और साथ ही दुनिया में इस बीज के व्यापार पर मजबूत पकड़ बन गई। अमरीकी कृषि विभाग के साथ डेल्टा एंड पाइन ने जो पेटेंट टर्मिनेटर टेक्नोलॉजी पर ले रखा था 3 मार्च 1998 को, वह भी मोनसेंटो के अधिकार में आ गया।
11. 11 मई 1998 को अमरीका की दूसरे नम्बर की सबसे बड़ी कंपनी डेकाल्ब को 2.3 अरब डॉलर में अधिग्रहित कर लिया।
12. 1998 में भारत की कंपनी म्हाइको (महाराष्ट्र हाइब्रिड सीड्स कंपनी लिमिटेड) के साथ संयुक्त उद्यम। म्हाइको के पेडअप मूल्य का 25 गुना भुगतान (180 करोड़ रु.) करके इसके 26 फीसदी शेयर मोनसेंटो ने खरीद लिए हैं। बंगलूर के भारतीय विज्ञान संस्थान (आई.आई.एस.सी.) में 2.5 करोड़ डॉलर का अनुदान देकर वहाँ शोध एवं विकास केन्द्र कायम किया है।
13. जुलाई 1998 में मोनसेंटो ने ब्रिटेन की कंपनी यूनीलीवर के यूरोपीय गेहूँ प्रजनन व्यवसाय – प्लांट ब्रीडिंग इंटरनेशनल कैंब्रिज – को 52.5 करोड़ डॉलर में खरीद लिया।
14. 1 जून 1998 को मोनसेंटो का विलय अमरीका की शोध आधारित दवा उद्योग और स्वास्थ्य रक्षा उत्पाद कंपनियों में एक बड़ी कंपनी अमरीकन होम प्रॉडक्ट कॉरपोरेशन (एएचपी) में हुआ। 33 अरब डॉलर का यह विलय दवा उद्योग का सबसे बड़ा और इतिहास का छठा सबसे बड़ा विलय था। विलय के बाद यह कंपनी कृषि रसायन में दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी बन गई।

लूट के तरीके और इरादे

मोनसेंटो की विश्व विजय की रणनीति का दूसरा पक्ष है फसलों के बीजों पर पेटेंट लेकर एकाधिकार कायम करना। डब्ल्यूटीओ के पेटेंट कानून ने 20 साल का पेटेंट माना है, इसका लाभ मोनसेंटो उठा रही है। मोनसेंटो कर क्या रही है? दुनिया के अनेक देशों के किसानों ने किस्म–किस्म के बीज सालों–साल के प्रयोग से तैयार किए हैं, उन बीजों में कंपनी एक जीन इस प्रकार बदलती है जिससे बीज किसी रोग या हर्बीसाइड का प्रतिरोधी बन जाएं और फिर वह दावा करती है कि वह बीज किसानों का नहीं, उसकी निज़ी सम्पत्ति है। अब पेटेंट कराकर कंपनी उस पर एकाधिकार, कम से कम 20 साल के लिए कराती है। एक देश में पेटेंट लेने के बाद डब्ल्यू. टी. ओ. की मदद से वह पेटेंट सभी देशों में लागू हो जायेगा। मोनसेंटो तो एक कदम आगे है। टर्मिनेटर टेक्नोलॉजी का पेटेंट उसके हाथ में है। अब इस तकनीकी से ऐसे बीज बना रहे हैं जो केवल एक बार ही उगेंगे यानी किसान हर साल कंपनी से बीज लेने को मजबूर होगा। मोनसेंटो की एक योजना और है। एक नई तकनीकी है जिसे 'ऐपोमिक्टिक टेक्नोलॉजी' कहते हैं, इसके द्वारा पौधे संकर कृंतक (हाइब्रिड क्लोन) तैयार करने लगते हैं। ये हाइब्रिड क्लोन बीज बहुत सस्ते पड़ते हैं। अमरीका के कृषि विभाग ने 20 जनवरी 1998 को 'एपोमिक्टिक मक्का' पर पेटेंट ले लिया है। मोनसेंटो ने कृषि विभाग से यह पेटेंट खरीदने का इरादा बना लिया है।

मोनसेंटो ने जेनेटिक इंजीनियरी से सोयाबीन के बीज की ऐसी किस्म पैदा की है जिस पर उसकी 'हर्बीसाइड राउण्डअप' का असर नहीं होता। हाँ, अन्य खरपतवार खत्म हो जाते हैं। इसे 'राउण्डअप रेडी सोयाबीन' कहते हैं। इस किस्म को उसने पेटेंट करा लिया है और अपने पेटेंट की रक्षा के लिए उसने 1996 में एक योजना चालू की है। जो किसान राउंडअप रेडी सोयाबीन बीज खरीदते हैं, उन्हें एक करारनामे पर दस्तखत करने होते हैं जिसकी शर्तें हैं : किसान मोनसेंटो को यह अधिकार देता है कि उसके खेतों का मोनसेंटो 3 साल तक मुआयना कर सके, उसे मॉनिटर कर सके तथा खेतों का परीक्षण कर सके, किसान केवल मोनसेंटो का हर्बीसाइड राउण्डअप ही इस्तेमाल कर सकेगा, किसान को बीज बचाने और फिर से बोने का अधिकार छोड़ना पड़ेगा, किसान को वादा करना होगा कि वह किसी अन्य व्यक्ति अथवा संस्था को बीज न बेच सकेगा और न दे सकेगा। किसान को लिखित रूप से यह मंजूर करना होगा कि अगर वह इस समझौते के किसी भाग का उल्लंघन करता है तो उसे मोनसेंटो को उस समय की राउण्डअप रेडी जीन की लागू फीस का 100 गुना गुणित स्थानान्तरित बीजों की इकाई की संख्या देना होगा। इसमें वकील की न्यायोचित फीस तथा खर्चे भी जोड़ने होंगे। मोनसेंटो ने ऐसा ही करारनामा जेनेटिक इंजीनियरी से बने कपास के बीज राउण्डअप रेडी कनोला, मक्का, चुकन्दर के बीजों पर भी लागू किया है।

मोनसेंटो इस बात का भारी प्रचार कर रही है कि जेनेटिक इंजीनियरी पर्यावरण मित्र है, इससे स्वास्थ्य को फायदा पहुँचता है। यह तकनीक ही दुनिया से भूख को खत्म

करेगी और इसी से कीटनाशकों के जहर से बचा जा सकता है। पर यह शुद्ध व्यापार लाभ का प्रचार है। दरअसल ये खुशनुमा घोषणाएँ उसके इस इरादे को ढकने के लिए हैं जिसके तहत वह 400 अरब डॉलर के वैश्विक बाजार पर किसी न किसी तरीके से कब्जा करने की तैयारी में है। वैश्विक अर्थव्यवस्था का 65 प्रतिशत भाग कृषि से आता है और मोनसेंटो की निगाहें इस पर टिकी हैं।

मोनसेंटो का विरोध

मोनसेंटो तथा अन्य जेनेटिक इंजीनियरी वाली दानव कंपनियों के बीच घमासान युद्ध चल रहा है दुनिया की खाद्य आपूर्ति पर अधिक से अधिक कब्जा करने का। इसका नतीजा हो रहा है परम्परागत प्राकृतिक बीजों का विनाश और जेनेटिक इंजीनियरी से बने बीजों का बाहुल्य। मोनसेंटो इस महायुद्ध में हर संभव चालें अपना रही है। सरकारी तंत्र में तेजी से घुसपैठ बना रही है। पिछले दो–तीन सालों में अमरीका के व्हाईट हाउस और कृषि विभाग के कई ऊँचे पदों पर बैठे अफसर मोनसेंटो में शामिल हो गए हैं। वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों में भी उसकी पहुँच बढ़ रही है। भारत के प्रतिष्ठित संस्थान इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बंगलूर में उसने अपना केन्द्र बना लिया है जिसके माध्यम से भारत की समस्त जैव विविधता के ज्ञान पर उसकी पहुँच बनती जा रही है। अमरीका में सेंट लुइ, जहाँ मोनसेंटो का मुख्यालय है, में यह कंपनी एक विशाल पौध विज्ञान केन्द्र अगले कुछ दिनों में खड़ा करने जा रही है जो विश्व में अपने किस्म का सबसे बड़ा केन्द्र होगा। इसमें मोनसेंटो के साथ मिसूरी बोटेनिकल गार्डन, कोलम्बिया स्थित मिसूरी विश्वविद्यालय और सेंट लुई स्थित वाशिंगटन विश्वविद्यालय शामिल होंगे। 800 किलो मीटर अर्धव्यास के वृत्तीय क्षेत्र में यह केन्द्र हजारों पौध प्रजातियों पर जेनेटिक इंजीनियरी का प्रयोग करके खाद्य और खेती पर कंपनी राज कायम करने का बेमिसाल उदाहरण बनेगा।

स्रोत – मोनसेंटो : रिसर्च फाउंडेशन फार साइंस टेक्नोलॉजी एंड इकोलॉजी, ए–60, हौजखास, नई दिल्ली–17,
थर्ड वर्ल्ड रिसर्जेंस. अंक–97, 224 मैकलिस्टर रोड 10.400 पेनांग, मलेशिया

पेप्सी
हत्याओं और धोखाधड़ी का दूसरा नाम

एशिया और यूरोप को रौंद डालने के बावजूद मंगोलिया का चंगेज खाँ आज के जमाने के हिसाब से जिस विश्व विजय का सपना तलवार के बल पर पूरा नहीं कर पाया उसे पूरा कर दिखाया है अमरीका की कम्पनी पेप्सी ने; और वह भी तलवार की नोंक से नहीं, ठंडे पेय की बोतलों से। इस महाभियान में पेप्सी का एक प्रतिस्पर्धी जोड़ीदार भी है अमरीका की ही कम्पनी कोक। इस समय दुनिया के 190 देशों में पेप्सी के पेय पेप्सीकोला का वितरण होता है। यों तो यह कम्पनी खाद्य प्रसंस्करण (फूड प्रौसेसिंग) में भी काम करती है, पर इसका मुख्य कारोबार ठंडे पेय का ही है।

विश्व विजय के आखिरी मुकाम तक पहुँचने के लिए पेप्सी ने ऐसा कोई तरीका नहीं जो अपनाया न हो। प्यास मनुष्य की सहज प्राकृतिक जरूरत है। इसके सहारे अपना व्यापारिक साम्राज्य खड़ा करने की पेप्सी की प्यास बढ़ती ही जा रही है। आम लोगों के सम्मोहन के लिए इसने क्या–क्या नहीं किया है: अन्तरराष्ट्रीय खेलों का प्रायोजन, नामी फिल्मी हस्तियों, खिलाड़ियों और गायकों द्वारा प्रचार, टी.वी. पर विज्ञापन और सीरियल। पर नाच, गाना और खेल ही पेप्सी के हथियार नहीं हैं, इसका इतिहास हत्याओं, धोखाधड़ी, छल–फरेबी, जालसाजी जैसे अपराधों से भी भरा पड़ा है।

अमरीका में गृहयुद्ध के बाद 1860 और 1870 के दशकों में खासतौर से दक्षिण प्रदेशों के अमरीकी टूट गये थे। मानसिक रोग, चिड़चिड़ापन, हिस्टीरिया, अपराधबोध, सिरदर्द, शराबखोरी और नपुंसकता जैसी बीमारियाँ अमरीकी समाज में फैल रही थीं। कुछ नीम हकीमों ने इसका फायदा उठाया। उत्तरी कारोलिना के कैलब ब्रैढम नामक फार्मासिस्ट ने डिस्पैप्सि को ठीक करने के लिए 1898 में पेप्सीकोला बनाना शुरू किया। 1905 में ब्रैढम ने पहला बॉटलिंग प्लॉट लगाकर इसे उद्योग की तरह चलाना शुरू किया। पहले और दूसरे महायुद्ध में चीनी के दाम बहुत बढ़ जाने से इस कम्पनी का दिवाला निकल गया, पर इस कम्पनी ने विज्ञापन के सारे हथकण्डे अपनाकर अपने को फिर से खड़ा कर लिया और 1959 के आते–आते कम्पनी का मुनाफा सात सौ प्रतिशत पहुँच गया। 1963 में इस कंम्पनी के निदेशक डोनाल्ड कैंडिल बने। कैंडिल ने मास्को में अमरीकी राष्ट्रीय प्रदर्शनी में सोवियत संघ के प्रधानमंत्री खुश्चेव को पेप्सी की बोतल पिलाई और बोतल के साथ उनका फोटो खींच लिया और इसको प्रचार में कैंडिल ने खूब भुनाया। इस कम्पनी ने प्रतिद्वन्द्वी कम्पनी कोक के साथ कोला पेय को पाँच सौ साल पुराने अमरीकी राष्ट्र की देशभक्ति से अपने को जोड़ा और अमरीकी विकास और संस्कृति के प्रतीक के रूप में अपने को उजागर किया और खूब लाभ उठाया और अमरीकी प्रभाव को दुनिया में फैलाने में मदद भी की है। दरअसल पेप्सीकोला और कोकाकोला को आधुनिकता के प्रतीक बनाने में इन कम्पनियों

ने भारी धनराशि खर्च की और अकूत धनराशि कमाई। दुनिया के नब्बे प्रतिशत से अधिक

ठण्डे पेय पर कब्जा करके अमरीकी उपनिवेशवाद को कायम करने में इन कम्पनियों की अहम् भूमिका रही है।

कहानी भारत में प्रवेश की

पेप्सी और कोक हिन्दुस्तान में चौथे दशक में एक साथ ही आये थे लेकिन पाँचवे दशक के मध्य में कोक के सामने न टिक पाने के कारण पेप्सी ने अपना कारोबार भारत में बंद कर दिया। कोकाकोला को जनता पार्टी सरकार ने 1977 में देश निकाला कर दिया था। पर ये कम्पनियाँ हार मानने वाली नहीं थीं। 1985 में पेप्सी ने फिर से भारत में घुसने की कोशिश की। शायद ही किसी परियोजना में इतना विवाद उठा हो जितना पेप्सी के प्रवेश को लेकर उठा। भारत के लोगों को पेप्सी के कारनामों की खास तौर से आपराधिक कारनामों की जानकारी मिल चुकी थी। पेप्सी कम्पनी के सम्बन्ध अमरीका की खुफिया एजेन्सी सीआईए से रहे हैं। चिली में सत्तर के दशक में वामपंथी विचारधारा वाले डॉ. सल्वादोर अलन्दे अमरीका की सारी विरोधी कोशिशों के बावजूद राष्ट्रपति बने। वे अमरीकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से देश की तबाही को अच्छी तरह जानते थे और उन्होंने पेप्सी सहित अमरीकी कम्पनियों को देश से बाहर निकालने का फैसला लिया। इस समय अमरीका के राष्ट्रपति निक्सन थे और पेप्सी के कैन्डिल निक्सन के नजदीकी दोस्त थे। कैन्डिल ने राष्ट्रपति निक्सन के माध्यम से डॉ. अलेन्दे को सबक सिखाने का फैसला किया। निक्सन ने सीआईए के निदेशक हेल्मेज को आदेश दिया कि वे अलेन्दे को हटाने की कोशिश करें। डॉ. अलेन्दे को इसकी भनक लगी और सन् 72 के अंत में संयुक्त राष्ट्रों के सामने अपने को बचाने की गुहार लगाई। पर सन् 73 के शुरू में ही अलेन्दे को गोली मार दी गई।

पेप्सी की निगाह भारत पर लगी थी। पेप्सी के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी रोजेरे एनरिको ने भारत को 'पचासी करोड़ आत्माओं का गरम प्यासा देश' कहा था। पेप्सी की खपत का औसत प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष अमरीका में 346 बोतलें, यूरोप में 180 बोतलें, थाईलैंड में 86 बोतलें, पाकिस्तान में 13 बोतलें और बांगलादेश में 26 बोतलें था जबकि यह औसत भारत में केवल 2.8 बोतलें था। एनरिको को भारत में विशाल संभावनाएँ दिख रही थीं। केवल पेय बनाने बेचने के लिए पेप्सी को अनुमति नहीं मिलने वाली थी इसलिए उसने खाद्य प्रसंस्करण और कृषि का मुखौटा लगाकर भारत में प्रवेश करने की रणनीति बनाई। उसने भारत की एक कम्पनी एग्रो प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट्स इण्डिया प्रा.लि. के साथ संयुक्त उद्यम बनाकर 25 अप्रैल 1985 को औद्योगिक विकास मंत्रालय के सचिव को प्रवेश के लिए औपचारिक प्रार्थनापत्र दिया। अपने आवेदन में उसने बताया कि उसके कारोबार लगने से भारत की कृषि क्षेत्र में ताकत बढ़ेगी, उसके उत्पादन के लिए यदि एक भाग आयात होगा तो तीन भाग निर्यात होगा। पेप्सी भारत को खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ठण्डे पेय बनाने की तकनीक देगा और इसके लिए विदेशी मुद्रा बाहर नहीं जाएगी। इस परियोजना से संबंधित अन्य व्यवसायों को भी प्रोत्साहन मिलेगा। औद्योगिक और कृषि

क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और उपभोक्ता बाजार के विस्तार होने से सरकार की आमदनी में काफी वृद्धि होगी। पेप्सी ने एक अप्रवासी भारतीय रमेश वंगल का भी उपयोग किया। उसकी मदद से पेप्सी कोला ने टाटा के उद्यम वोल्टाज और पंजाब एग्रो इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन के साथ भी सहयोग बना लिया। पेप्सी के प्रस्ताव का सरकार में शुरू से ही विरोध हुआ। सन् 86–87 में सम्बन्धित मंत्रालयों के सचिवों की रिपोर्ट आई कि पेप्सीकोला के आने से भारत के घरेलू उद्योग को भारी नुकसान होगा और देश को इससे कोई लाभ नहीं होगा। फिर भी पेप्सी की 22.5 करोड़ रुपयों की परियोजना मंत्रिपरिषद की मंजूरी के लिए भेजी गई। तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने सितम्बर 1988 में उसे मंत्रियों के एक समूह को विचार के लिए भेज दिया। इस ग्रुप का नेतृत्व उस समय के वित्तमंत्री नारायण दत्त तिवारी को सौंपा गया पर उन्हें हटाकर पेप्सी समर्थक मंत्री बूटा सिंह को समूह का नेता नियुक्त किया गया।

इस बीच प्रेस के माध्यम से इस परियोजना के खिलाफ अनेक वक्तव्य निकले जिनमें यह तर्क दिया गया कि भारत को अपने पेय का उद्योग बढ़ाने के लिए किसी विदेशी तकनीक या कम्पनी की जरूरत नहीं। खासतौर से सीआईए से सम्बन्ध रखने वाली, पेप्सी को भारत में हरगिज न घुसने देना चाहिए। पेप्सी कम्पनी ने जो भी वचन प्रस्ताव में दिये हैं वे गलत हैं। अगर पेप्सी भारत में आना चाहती है तो वह खाद्य और कृषि में आये न कि ठंडे पेय में। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी को सांसद चिमनभाई मेहता ने भी लंबा पत्र लिखकर कहा कि आप के द्वारा पेप्सीकोला का समर्थन बड़ी भारी भूल है। पेप्सी कोला के समर्थन से कांग्रेस की छवि धनी समर्थक और गरीब विरोधी मानी जाएगी। कृपया यह न भूलिए कि पेप्सीकोला दानव है, वह किसी सरकार क़ी परवाह नहीं करता। यदि आप इसे रोकेंगे तो वह आप के ऊपर हमला करेगा। कौन जानता था कि चिमन भाई मेहता के यह शब्द अक्षरशः सत्य सिद्ध होंगे।?

मीडिया में भारी विरोध के साथ–साथ राजनैतिक दलों में भी पेप्सी के विरोधी खड़े हो गए। लोकसभा में भी पेप्सी के मामले को लेकर गरमागरम बहस हुई। पेप्सी ने इस विरोध का सामना करने के लिए दोहरी चाल चली। एक ओर तो पंजाब एग्रो के निदेशक अमिताभ पाण्डे और केंद्र में सचिव प्रेम शंकर झा को अपनी ओर मिला लिया। दूसरी तरफ हरकिशन शास्त्री की मदद से सांसदों को भी अपनी ओर तोड़ने की कोशिश की। प्रेम शंकर झा ने खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए पेप्सी के महत्त्वपूर्ण योग़दान की वकालत करते हुए टाइम्स आफ इण्डिया में पेप्सी समर्थक लेख प्रकाशित किया था जिसके जवाब में इन्द्र कुमार गुजराल ने, जो पहले कांग्रेस में थे और बाद में जनता दल में शामिल हो गए, इसी अखबार में एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को बढ़ावा देना चाहिए पर इसके लिए बहुराष्ट्रीय दानव पेप्सी की कतई जरूरत नहीं है। छोटे–छोटे देशों ने भी यह तकनीक विकसित कर ली है। इस कम्पनी ने दक्षिण अमरीका के देशों में विध्वंसक राजनैतिक और आर्थिक नतीजे पैदा किए हैं। पेप्सी का एकाधिकार हो

जाने से किसान खत्म हो जाएंगे।

पेप्सी ने पंजाब एग्रो के अमिताभ पाण्डे और उनके उत्तराधिकारी गोकुल पटनायक की मदद से गाँव–गाँव से पेप्सी के समर्थन में बीस हजार हस्ताक्षर इकट्ठे किए। अपने समर्थन में पंजाब की किसान लॉबी खड़ी की जिसके लिए महेन्द्र सिंह टिकैत और कांशीराम का भी समर्थन माँगा गया। पंजाब में बढ़ते आतंकवाद का इस्तेमाल करके पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला द्वारा बार–बार पत्र लिखाए गए जिनमें कहा गया कि पेप्सी के आने से पंजाब में पचास हजार रोजगार पैदा होंगे जिससे आतंकवाद पर काबू पाया जा सकेगा। मुख्यमंत्री के गोपनीय पत्रों को प्रेस में लीक कराया गया। इसी के साथ अमरीका का दबाव भी सरकार पर बढ़ाया गया। अमरीका के तत्कालीन उपराष्ट्रपति जार्ज बुश और ब्यापार प्रतिनिधि कारला हिल्स ने भारत सरकार को बार–बार धमकियाँ दी कि यदि पेप्सी के प्रवेश में अड़ंगे लगाये जाएंगे तो भारत में विदेशी पूँजी न आ सकेगी। अमरीका के काले कानून सुपर 301 की धमकियाँ दी गई।

लेकिन पेप्सी ने आखिरी तुरुप का पत्ता हरिकिशन शास्त्री, सांसद और कांग्रेस पार्टी के महामंत्री के माध्यम से फेंकना चाहा। हरिकिशन शास्त्री के माध्यम से अपने समर्थन में पेप्सी ने सांसदों के हस्ताक्षर से सरकार पर दबाव बनाने की चाल चली। शास्त्री ने समर्थन देने के लिए पेप्सी अधिकारियों से सारे अन्दरूनी कागजात माँग लिए। पेप्सी के रमेश बंगल नें प्रधानमंत्री कार्यालय में अपनी घुसपैठ बना ली थी इसलिए सारी अंदरूनी खबरें व कागजात मिल जाते थे। इन कागजातों को पढ़कर हरिकिशन शास्त्री का दिमाग बदल गया और उन्होंन यह कहते हुए कि पेप्सी को अनुमति देना राष्ट्रीय गद्दारी होगी, पेप्सी के विरोध में बावन सांसदों के हस्ताक्षर करा लिए। इस संकट से उबरने के लिए वंगल ने नई चाल चली, उसने दक्षिण के सांसदों से समर्थन में हस्ताक्षर प्राप्त करने की योजना बनाई। दक्षिण के एक सांसद डॉ. राजेश्वरन की मदद से त्रिची के कांग्रेस सांसद और अरक सम्राट अदैकालराज से सम्पर्क साधा। अदैकालराज ने पेप्सी के सहयोगी वोल्टाज से लिखित रूप में यह वायदा ले लिया कि समर्थन के बदले में पेप्सी का दक्षिण का बॉटलिंग प्लांट उसके नाम से होगा। अदैलकालराज ने छप्पन सांसदों से पेप्सी के समर्थन में वक्तव्य तैयार कर दिया। मजे की बात यह है कि इन छप्पन सांसदों में से आठ वे थे जिन्होंने पेप्सी विरोधी वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए थे। 15 अगस्त 1986 को आजाद देश के गद्दार सांसदों ने विरोधी ताकत को भारत में आने के लिए रास्ता खोलने की तैयारी कर दी।

प्रधानमंत्री राजीव गांधी के ऊपर एक तो पंजाब का दबाव दूसरे सांसदों का दबाव पड़ रहा था तीसरे अमरीका का दबाव। अपने कार्यालय के प्रधान सचिव गोपी अरोड़ा के घोर विरोध के बावजूद राजीव गाँधी ने 19 सितम्बर 88 को पेप्सी को अनुमति दे दी।

सभी वायदे झूठे

पेप्सी को कारोबार करने की इजाजत देते समय सरकार के साथ जो अनुबंध हुआ उसकी प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थीं –

1. इस परियोजना से पचास हजार लोगों को रोजगार मिलेगा जिससे पचीस हजार अतिरिक्त रोजगार पंजाब में पैदा होंगे।
2. पंजाब की कुल फल और सब्जियों की फसल का पचीस प्रतिशत इस योजना में प्रसंस्करित होगा।
3. यह कम्पनी खाद्य प्रसंस्करण में उच्च तकनीक लाएगी और भारतीय उत्पादों के निर्यात में मदद करेगी।
4. कम्पनी की कुल पूँजी का चौहत्तर प्रतिशत खाद्य और कृषि प्रसंस्करण में और केवल पचीस प्रतिशत ठंडे पेय में लगेगा।
5. उत्पाद का पचास प्रतिशत निर्यात किया जायेगा। यह अनुबंध दस वर्ष लागू रहेगा। ठंडे पेय का सांद्र बाहर से आयात नहीं होगा, उसे भारत में ही तैयार किया जाएगा।
6. इस परियोजना पर एक डालर भारत द्वारा खर्च करने पर कम्पनी निर्यात से पाँच डॉलर कमा कर देगी।
7. विदेशी ब्राण्ड नाम नहीं इस्तेमाल किए जाएंगे।

पेप्सी ने पिछले दस सालों में हर तरीके से सरकार को धता बताई है। सारे नियम कानूनों को तोड़ा है और ऊपर लिखे वायदों में से एक भी पूरा नहीं किया है। निर्यात की शर्त की खाना पूरी करने के लिए पेप्सी ने खुले बाजार से चावल और चाय खरीद कर अपना उत्पाद बताते हुए उसका निर्यात किया और सरकार को बता दिया कि निर्यात की शर्त पूरी हुई। खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय के सचिव आर के रथ ने वाणिज्य मंत्रालय को पत्र लिखा, 'हमारे ध्यान में यह बात आई है कि पेप्सी तरह–तरह के दावे कर रहा है। यह सभी दावे झूठे हैं। अपने निर्यात वायदों के अंतर्गत पेप्सी ने एक नये पैसे की कीमत का निर्यात नहीं किया और पेप्सी ने ठंडे पेय पर पचीस प्रतिशत पूँजी लगाने की सीमा का उल्लंघन किया।' फलों का रस निकालने के लिए मशीनें आयात करने के नाम पर आयात कर में छूट इस कम्पनी ने ली पर मशीनें फलों का रस निकालने के लिए नहीं बल्कि ठंडा पेय बनाने के लिए मँगाई। पेप्सी परियोजना की शुरुआती लागत कीमत बाईस करोड़ थी जिसमें हेराफेरी करके इसे पचहत्तर करोड़ की बना लिया। कुछ दिनों लहर पेप्सी का नाटक करके अब यह कम्पनी शुद्ध विदेशी नामों से ही अपने उत्पादों को बेच रही है। खाद्य प्रसंस्करण तो इस कम्पनी ने छोड़ ही दिया है और आक्रामक रूप से ठंडे पेय का कारोबार फैला रही है। यह कम्पनी इस समय प्रतिवर्ष चार सौ करोड़ रुपया विज्ञापन पर खर्च कर रही है।

रहस्यमय हत्या

एक बार भारत में पाँव रखने के बाद पेप्सी ने अपने विरोधियों का या तो मुँह बन्द कर दिया या गला बंद कर दिया। कांग्रेस के महासचिव के.एन.सिंह का एक वक्तव्य 13 फरवरी 1988 को टाइम्स आफ इण्डिया में छपा था जिसका शार्षक था 'पेप्सी–साम्राज्यवादी जहर।' उन्होंने कहा था कि पेप्सी साम्राज्यवादी ताकतों का मोर्चा है जो पेरू और चिली

जैसे देशों में राजनैतिक हत्याएं और अस्थिरता पैदा करने में शामिल रहे हैं। उन्होंने पूछा—क्या देश की सुरक्षा की कीमत पर हमें ठंडे पेय की जरूरत है। के. एन. सिंह को अपने महासचिव पद से हाथ धोना पड़ा। 21 सितम्बर 1988 को बिजनेस स्टैंडर्ड में छपे एक वक्तव्य में जार्ज ने राष्ट्रीय मोर्चा के संयोजक विश्वनाथ प्रताप सिंह से आग्रह किया था कि वे पेप्सी को सरकार द्वारा दी गई इजाजत के खिलाफ राष्ट्रव्यापी संघर्ष चलायें। आज सरकार में महत्त्वपूर्ण मंत्री होते हुए भी जार्ज फर्नांडीज का ही मुँह सिल गया है।

लेकिन सबसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी उस व्यक्ति को जिसकी कलम से पेप्सी हिन्दुस्तान में घुसा था। 1989 के चुनाव में हार जाने के बाद पेप्सी कोला के बारे में राजीव गाँधी के विचारों में बदलाव आया। सण्डे पत्रिका को दिए गए साक्षात्कार में राजीव गाँधी ने यह स्वीकार किया कि यह परियोजना अब ठीक से नहीं चल रही है। खाड़ी युद्ध के समय राजीव गाँधी ने अमरीकी बम वर्षकों का भारतीय हवाई अड्डों पर तेल लेने का विरोध किया था। सत्तारूढ़ गैर कांग्रेसी दलों की सरकार में आपसी उठापटक से यह जाहिर हो रहा था कि पेप्सी और अमरीकी विरोधी राजीव गाँधी फिर से सत्ता में आ सकते हैं। फिर यह भी डर था कि सत्ता में राजीव गाँधी के फिर से आ जाने से भारत में राजनैतिक स्थिरता आ सकती थी जो पेप्सी और अमरीकी हितों के अनुकूल नहीं थी। स्वयं राजीव गाँधी ने 21 मई 1991 को, जिस दिन उनकी हत्या हुई थी, दो पत्रकारों — बरबारा क्रोसेट और नीना गोपाल को दिये साक्षात्कार में, जो टाइम्स आफ इण्डिया में प्रकाशित हुआ था, साफ शब्दों में कहा था कि 'एक महाशक्ति भारत में अस्थिरता देखना चाहती है और मेरा फिर से सत्ता में आना उसे पसंद नहीं है"। यह पूछने पर कि वह महाशक्ति कौन—सी है, तो राजीव गाँधी ने कहा था "जाहिर है कि वह सोवियत संघ नहीं है"। राजीव गाँधी ने विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार को पेप्सीकोला के ऊपर प्रतिबन्ध न लगाने के लिए दोषी ठहराया था। राजीव गाँधी की हत्या के पहले कुछ घटनाएँ घटीं। लिट्टे और इजरायल में सम्बन्ध बन चुके थे और लिट्टे का प्रशिक्षण इजरायलियों द्वारा होने की चर्चा थी। फिलिस्तीन मुक्ति संगठन के खुफिया विभाग ने सूचना दी थी कि बड़ी संख्या में इजरायली पर्यटक कश्मीर में पहुँचे और फिर वे दक्षिण भारत गये। राजीव गाँधी की हत्या के दो सप्ताह पहले 8—9 मई को पेप्सी कम्पनी का अध्यक्ष सिनक्लेयर भारत आया था। 14 से 24 मई तक भारत की पेप्सी कम्पनी का अध्यक्ष रमेश वंगल भारत से लापता था। अदैकालराज ने इस बीच श्रीलंका की चार बार यात्राएँ की थी। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि राजीव गाँधी की हत्याकाण्ड की जाँच करने वाले आयोग ने इस काण्ड में पेप्सी के हाथ की जाँच नहीं की।

देशों में राजनैतिक अस्थिरता तथा उथल पुथल मचाने में पेप्सी काफी नाम कमा चुका है। कहा जाता है कि जैसे ही चीन और सोवियत संघ में पेप्सी का प्रवेश हुआ चीन में भारी उथल—पुथल मची और सोवियत संघ अंततः टूट ही गया। पेप्सी के दो मुँह हैं, उसका एक मुँह 'नई पीढ़ी की नई उमंग" और आजादी दिल की" के रूप में जूही चावला, कपिलदेव, सचिन तेन्दुलकर और दलेर मेंहदी के रूप में और दूसरी छवि सीआईए के

वफादार एजेंट के रूप में। लेकिन दूसरी छवि छिपी रहती है।

पेप्सी ने आक्रामक प्रचार करके भारी अपसंस्कृति देश में फैलाई है और देश को सांस्कृतिक रूप से गुलाम बनाने के लिए वह हर संभव तरीका अपना रही है। ठंडे पेय के नाम पर उसने कोकाकोला के साथ भारत के सभी देशज उद्योगों को समाप्त कर दिया। लाखों लोगों की रोजी–रोटी खत्म की लेकिन अभी उसकी प्यास बुझी नहीं है। अब वह पानी का धंधा शुरू कर रही है इसके लिए वह पचहत्तर करोड़ रूपया खर्च करने जा रही है और आश्चर्य नहीं होगा यदि यह राक्षस यह प्रचार करने में सफल हो जाय कि भारत का पानी पीने लायक नहीं है पानी तो पेप्सी का ही पीना चाहिए।

संदर्भ : राजेन्द्र दारा की पुस्तक : द रीयल पेप्सी द रीयल स्टोरी

सच्चे स्वराज्य के महाअभियान में शामिल होइए

यह एक प्रमाणित तथ्य है कि कुछ सौ वर्ष पूर्व यह देश संसार का सिरमौर था। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, संगीत, कला, तकनीक, अर्थव्यवस्था, प्रशासन आदि सभी दृष्टियों से हम अग्रणी थे। इस देश की सम्पूर्ण धरोहर को विदेशी आक्रांताओं द्वारा बार–बार बुरी तरह रौंद दिये जाने की भरसक कोशिशों के बाद भी मेहरौली का सीना ताने खड़ा बिना जंग लगा लौह स्तम्भ, देश के कोने–कोने में बिखरे पड़े वास्तु कला के उत्कृष्ट नमूने, चरक–सुश्रुत मे वर्णित आधुनिक चिकित्सा विज्ञान को भी चुनौती देने वाला शल्य क्रिया विज्ञान, आज भी जहाँ–तहाँ दिख जाने वाला लोककलाओं का अद्‌भुत संसार, ढाका के मलमल सरीखे वस्त्रों की बानगी–आदि अनगिनत इतिहास–तथ्य अगर आज भी अपनी गौरवगाथा सुनाते दिख रहे हैं, तो कल्पना करिए कि विदेशी आक्रमणों से पूर्व भारत का अतीत कितना वैभावशाली रहा होगा।

लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि विदेशी लुटेरों के चलते महादानियों का यह देश भिखारी बन चुका है। खास बात यह है कि लूट के लम्बे इतिहास में भी हमारी सबसे ज़्यादा लूट अंग्रेजों ने की। अंग्रेजों की गुलामी के दौर में सम्पत्ति–संसाधनों के साथ–साथ हमारी संस्कृति को भी तबाह करने की साजिशें रची गईं। अपने साम्राज्य की जड़ें मजबूत करने के लिए अंग्रेजों ने भारत की सारी व्यवस्थाओं को ही अपने अनुसार बदलने की मुहिम चलायी। इस मुहिम में वे काफी हद तक सफल भी रहे। अगर कुछ कसर बाकी रह गयी थी तो आज़ादी के बाद अंग्रेजी मानसिकता में रचे–बसे हमारे रहनुमाओं ने उसे अब पूरा कर दिया है। ऐसा लगता है जैसे अंग्रेजों के मानसपुत्रों ने आजादी के दीवानों के लाखों बलिदानों को बेमानी बना दिया हो।

कटु सत्य यह है कि हम आजादी के भ्रम में जी रहे हैं। अंग्रेज चाहते थे कि हम मानसिक रूप से गुलाम हो जाएं, तो उन्हें बंदूकों–तोंपों की भाषा न बोलनी पड़े, सो अब वही हो गया है। हमारी शासन–प्रशासन और विकास का सम्पूर्ण ढाँचा अब भी लगभग जस–का तस है। इसी का नतीजा है कि आज हम कहीं ज्यादा बड़ी लूट के शिकार हो रहे हैं। जब हम एक ईस्ट कंपनी की जेब अनिच्छा के बावजूद अंग्रेजी कोड़ों–बन्दूकों के डर से भरते थे, पर अब मानसिक गुलामी के वशीभूत हम हजारों बहुराष्ट्रीय कंपनियों की जेबें स्वेच्छा से भर रहे हैं।

देश लगातार कंगाल हो रहा है और नतीजे के रूप में बेरोजगारी–भुखमरी का भयावह दृश्य सामने है। विकास के पश्चिमी तौर–तरीके के चलते संस्कृति का संकट भी अब भयावह रूप में दिखने लगा है। हिंसा, भ्रष्टाचार, बलात्कार, देश–समाज के प्रति

संवेदनहीनता जैसी ढेरों समस्याएँ इसी की अनिवार्य परिणतियाँ हैं।

सवाल यह है कि क्या इस देश के वजूद को तिल–तिल कर समाप्त होते हम ऐसे ही हम देखते रहेंगे? संसाधनों के अकूत भंडार से समृद्ध भारत की धरती पर रहते हुए और मेहनत कश होते हुए भी क्या इस देश की एक बड़ी आबादी फुटपाथों पर जिन्दगी गुजारने और भूख से पेट मरोड़ने को ही हमेशा अभिशप्त रहेगी? कबीर, नानक, दयानन्द, विवेकानंद, गाँधी, सुभाष, लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, बिस्मिल, अश्फाक जैसों के देश में क्या अब माइकल जैक्सनों और मेडोनाओं के कार्टून ही तैयार होते रहेंगे?

अगर आप देश की इस वर्तमान दिशा और दशा से सन्तुष्ट हैं, तो हमें आपसे कुछ नहीं कहना है। लेकिन यदि आप भी हमारी तरह चाहते हैं कि यह राष्ट्र स्वावलम्बी बने, यहाँ का समाज खुशहाल हो, हर तरफ अमन–चैन हो, दया–करुणा–ईमानदारी–संयम का सांस्कृतिक प्रवाह इस देश में फिर कायम हो– तो हमें आपकी जरूरत है। हमारी अपील है कि आप भी सच्चे स्वराज्य के लिए चल रहे इस महायज्ञ में शामिल होइए।

स्वदेशी, स्वावलम्बन पर आधारित शोषणविहीन समाज रचना के लिए आजादी बचाओ आंदोलन ने वर्तमान भारतीय व्यवस्थाओं को सही मायने में सम्पूर्ण भारतीय बनाने के लिए वृहद योजना तैयार की है। इस योजना के अनुसार यदि भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि–व्यवस्था, शिक्षा–व्यवस्था, स्वास्थ्य–व्यवस्था तथा न्याय–व्यवस्था का सम्पूर्ण स्वदेशीकरण को जाए तो यह देश स्वावलम्बी बन जाएगा; बेरोजगारी की समस्या नहीं रहेगी और सच्चे अर्थों में हम आजाद होंगे। आंदोलन का स्पष्ट मानना है कि इस देश के विकास का ढाँचा इस देश के सांस्कृतिक मूल्यों, भौगोलिक परिस्थितियों, संसाधनों और यहाँ की जनता की समझ व जरूरतों को ध्यान में रखकर ही बनाया जाना चाहिए; तभी इस देश को सुरसा की भाँति मुँह बाये खड़ी अनगिनत समस्याओं से मुक्ति मिल पाएगी और एक बार फिर हम दुनिया के मार्गदर्शक की भूमिका में आ सकेंगे।

इसी उद्देश्य और सपने के साथ आंदोलन के कार्यकर्त्ता देश भर में प्राणपण से संघर्षरत हैं। आपसे भी आंदोलन की यही अपेक्षा है कि इस महान उद्देश्य के साथ स्वयं तो जुड़िए ही, अपने साथियों को भी और देश भर में एक बार फिर आजादी की एक नई लड़ाई का माहौल तैयार करिए; ताकि आने वाली पाढ़ियों के लिए आशाजनक भविष्य की उम्मीदें जग सकें।

बहुराष्ट्रीय गुलामी से मुक्ति पाने तथा स्वदेशी की स्थापना के लिये चल रहे आन्दोलन की विस्तृत जानकारी के लिये पढ़ें आन्दोलन द्वारा प्रकाशित साहित्य

1) सच्चे स्वराज की रूपरेखा

2) बहुराष्ट्रीय कंपनियों की जंजीरों में जकड़ा दैनिक जीवन

3) बहुराष्ट्रीय कंपनियों का मकड़जाल

4) दवा क्षेत्र और स्वदेशाभिमान

5) स्वदेशी चिकित्सा

6) स्वावलंबी खेती कैसे करें

7) भारत का स्वधर्म

8) अंग्रेजों के पहले का भारत

9) भारतीय चित्त, मानस और काल

10) Collected work of Dharampal

11) Despoliation and defaming of India by Dharampal

12) 18वीं सदी में भारतीय विज्ञान और तकनीकी (प्रकाशनाधीन)

13) 18वीं सदी में भारतीय शिक्षा (प्रकाशनाधीन)

14) स्वदेशी विचार (प्रकाशनाधीन)

आजादी बचाओ आंदोलन की ऑडिओ कैसेट सूची

कैसेट नं. 1–2–3 : बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का इतिहास और वर्तमान

कैसेट नं. 4 – बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का झूठ

कैसेट नं. 5–6 : उदारीकरण और वैश्वीकरण से व्यापारी और उद्योगों के लिये खतरा

कैसेट नं. 7 मैकाले की शिक्षण पद्धति के परिणाम

कैसेट नं. 8 : एलिजाबेथ की भारत यात्रा और हमारी गुलामी मानसिकता

कैसेट नं. 9 : विदेशी कंपनियों और विज्ञापनों का समाज पर प्रभाव

कैसेट नं. 10 : अंग्रेजों की कानूनी व्यवस्था भारतीय अर्थव्यस्था और समाज के विकास में बाधक

कैसेट नं. 11–12 : भारतीय अर्थव्यवस्था में मंदी के कारण और निवारण –

कैसेट नं. 13–14 : बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा पेटेंट और दवा उद्योग पर हमला –

कैसेट नं. 15 : गौरक्षा आंदोलन और उसका महत्व –

कैसेट नं. 16. भारतीय बीमा उद्योग खतरे में –

कैसेट नं. 17–18 : सी.टी.बी.टी. और भारतीय अस्मिता –

कैसेट नं. 19–20 : भारतीय अर्थव्यवस्था को सुधारने के कुछ उपाय –

कैसेट नं. 21–22–23 : खेती और किसानों को गुलाम बनाने की साजिश –

कैसेट नं. 24–25 : प्रतिभा पलायन (ब्रेन ड्रेन) –

कैसेट नं. 26–27 : स्वदेशी आंदोलन में गणेशोत्सव का महत्व –

कैसेट नं. 28–29–30 : भारत पर विदेशी आक्रमण (कारगिल युद्ध)

स्वदेशी राग ही गाना (आंदोलन के गीतों की कैसेट)

आंदोलन से संबंधित किताबें और कैसेट प्राप्त करने के लिए आगे दिये गये पतों पर संपर्क करें। आंदोलन से संबंधित अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए भी इन्हीं पतों पर संपर्क करें।

आंदोलन के कुछ महत्त्वपूर्ण सम्पर्क पते

महाराष्ट्र

1 डा. सत्य नारायण बाल्दी, एस. एस. इण्डस्ट्रीज, इ–63, एम. आय. डी. सी. जलगांव–425003, फोन: (0257) 210073/210106

2 श्री अतुल मधुकर देशमुख, 16, हिंदुस्तान कॉलनी, वर्धा रोड, नागपुर–440015 फोन नं. (0712) 220453/223547

3 श्री. सुशील अजमेरा, भारत ग्रेनाइट कम्पाउंड, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे, दहिसर (ई.),संतोष नगर के पास, मुंबई – 400068. महाराष्ट्र फोन: (कार्या.) 8961223, 8961224(घर) 8978748, 8970812.

4 श्री. सुरेशजी पिंगले, 440, शिवाजी नगर, विद्यापीठ मार्ग, पुणे–16,फोन: (020) 5658544/5658566/5881816.

5 नारायण गुंडु पवार, मु. पो. गोकुल शिरगॉव, ता. करवीर, जि. कोल्हापुर, महाराष्ट्र फोन: (0231) 672479,672887

6 डॉ. सुविनय दांमले, आयुर्वेद चिकित्सालय, एस. टी. स्टॅण्ड के सामने ,मु. पो. कुड़ाल, जि. सिंधुदुर्ग. महाराष्ट्र फोन:(02362) 23423/22241.

7 श्री. राजकुमार बरड़िया, इंदिरा पार्क के सामने, परतवाड़ा, अमरावती. महाराष्ट्र फोन: (07223) 25639/20800

8 डॉ. अनिल पटेल, स्नेहा नाक, कान, गला, रूग्णालय, सिव्हील लाईन्स, यवतमाल. फोन (07232)43215/45216.

9 चंद्रकांत हिप्पलगांवकर, आदित्य श्रद्धा नगर, भोसला मिलीटरी स्कुल के पीछे,नासिक, महाराष्ट्र फोन (0253) 383173/ 354245

10 मुकुन्द गिरि, 'स्वदेशी' डाबकी रोड, गणेश नगर, पुराना शहर, अकोला–444002, महाराष्ट्र फोन:(0724)425242

राजस्थान

11 श्री. सम्पत सुवालका, डी–7–9, प्रथम मंजिल, वसंत विहार, गांधी नगर, भीलवाड़ा, राजस्थान फोन : (01482) 22524/26910/27638

12 श्री. सुरेश राठी, बॉम्बे मोटर्स के सामने,जोधपुर, राजस्थान फोन: (0291)437636

13 अभिषेक झंवर, 252 सी. तलवंडी, कोटा, राजस्थान, फोन: 361620/426801

गुजरात

14 श्री. वेलजी देसाई, 92, समर्थ टावर, अक्षर मार्ग, राजकोट–360001. गुजरात फोन: 480086/451086.

15 विनीत अग्रवाल, कॉन्फीसेक प्रिंटर्स, सी. 1 / 39 / 14 जी. आय.डी. सी. नारोडा

अहमदाबाद, गुजरात फोन: (079) 2821991/

16 अविनाश भाई गुप्ता, महालक्ष्मी सॉल्ट इंडस्ट्री, डीबिजेड(साउथ)193 शिवाजी पार्क के सामने, गांधीधाम कच्छ, गुजरात फोन: 34468/31019/35287 R.

17 डा. सुरेखा शाह, 2, भोलेश्वर प्लाट, पोरबन्दर, गुजरात

कर्नाटक

18 श्री. जसवीर सिंह कौशल, 17, म्युनिसिपल ब्लॉक, मारूति मंदिर के पास, गुरूकुल रोड, होसुर– हुवली– 580021 फोन (275694, 374531.)

19 श्री. हीरालाल शर्मा, मल्टी फार्मा, 166, अक्की पेठ, बैंगलोर–5600053.फोन: (080) (कार्या.) 6705196/ (नि.) 6701571.

मध्यप्रदेश

20 श्री जवाहर रमानी, 115 डी. संत कंवरराम नगर, वेरेसया रोड, भोपाल, फोन: 0755–762853.736216

21 श्री. प्रकाशजी अग्रवाल, श्याम इंडस्ट्रीज, 144, रानीपुरा, इंदौर, फोन:0731, 511535, 527079

छत्तीसगढ़

22 श्री दीपक चौधरी, सी/4/12 सेट बैंक कालानी, भिलाई (दुर्ग) फोन: 0788, 242036

23 श्री अनूप बंसल, सुन्दर नगर, सुपेला, भिलाई, दुर्ग, फोन: 0788, 355515

तमिलनाडू

24 उदय मेघाणी, 12 वासुदेवन स्ट्रीट के सामने, ओर्म्स रोड, किलपॉक, चेन्नई–600010, फोन: (044) 6400961

झारखण्ड़

25 अदीप कुमार, समता फ्लावर मिल, केम्प–1, बोकारो इस्पात नगर–827011, फोन: 0652, 43451

उत्तर प्रदेश

26 रूपेश पाण्डेय, स–1/164 ए नई बस्ती, दौलतपुर रोड़, वाराणसी, फोन: 0542, 587505, 581050

27 गौरव मिश्रा, 7/32, तिलक नगर, कानपुर–208002, फोन: 0512, 256104, 545173

28 मनोज कुमार शर्मा, मौ.– कोटपूर्वी, निकट रामलीला मैदान, सम्भल, जिला–मुरादाबाद, फोन: 05923, 24066

स्वदेशी अपनाएं विदेशी भगा

स्वराज प्रकाशन समूह